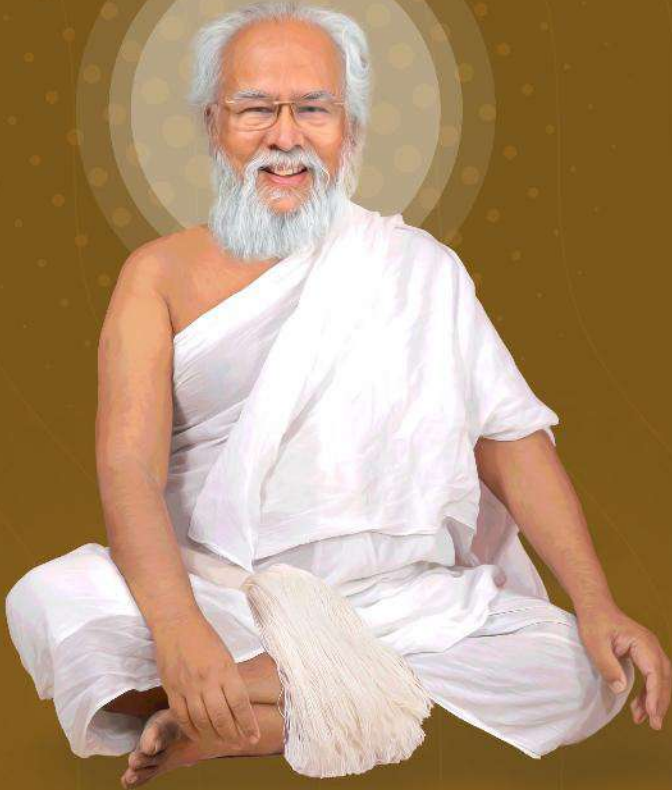


अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



એમનો સૌજન્ય ભર્યો વ્યવહાર,
મધુર મીઠોને મસ્ત મોજીલો સ્વભાવ
સહજ યાદ આવેને પીડા દે...
મારા પૂ. ગુરુદેવશ્રીનો સંસારે સ્વજન
પરિવાર એટલે થોડુંક લાગે.

« આ. યશોવર્મસૂરિની વંદનાવલી

उनका सौजन्य भरा व्यवहार, मधुर-
मीठा-मस्त-मौजी स्वभाव सहज
याद आता है और पीड़ा देता है ।

« आ. यशोवर्मसूरि की वंदनावली

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



सामूहिक क्रिया समये प्राप्त थनारा
सानिध्यनो अभाव वर्तायो छे.
वैविधता सभर स्तवन-सज्जाय-स्तुतीनी
प्रेरणानो स्त्रोत छीनवाद्य गयो.

« आ. पूर्णचंद्रसागरसूरिनी वंदना

सामूहिक क्रिया में प्राप्त होने वाले
सांनिध्य का अभाव हो गया है ।
विविधता सभर स्तवन-सज्जाय-स्तुति
की प्रेरणा का स्त्रोत छीन गया है ।

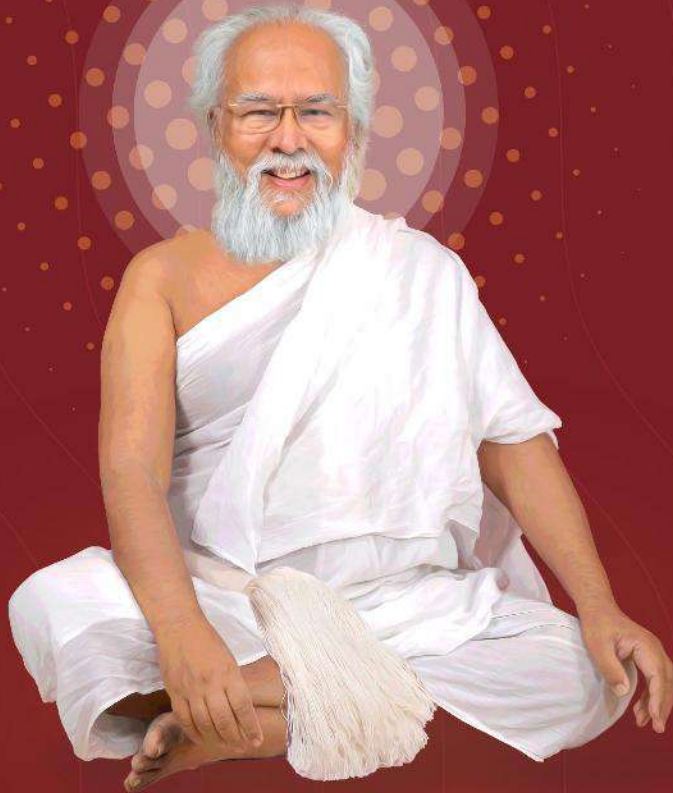
« आ. पूर्णचंद्रसागरसूरि की वंदना

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



पूज्यश्रीनी चिरविद्यायथी शासनने ञ्हु मोटी
ओट पडी. हमलां ४ पालीतालाथी शंभेश्वरना
विहारमां अयोध्यापुरममां महा सुद-५ना दिवसे
सांजे मधुर मुलाकात थय हती.. अमना श्रीमुजे
मजानुं गीत पय सांभजीने हुं धन्य थय गयो हतो.

« आ. जयसुंदरसूरिनी वंदनावली

पूज्यश्री की चिरबिदाई से शासन को बहुत बड़ी क्षति
पहुँची है । पालीताणा से शंखेश्वर के विहार में
अयोध्यापुरम् में माघ सुदी पंचमी की शाम को मधुर
मुलाकात हुई थी । उनके श्रीमुख से मजे का गीत
सुनकर मैं धन्य हो गयाथा ।

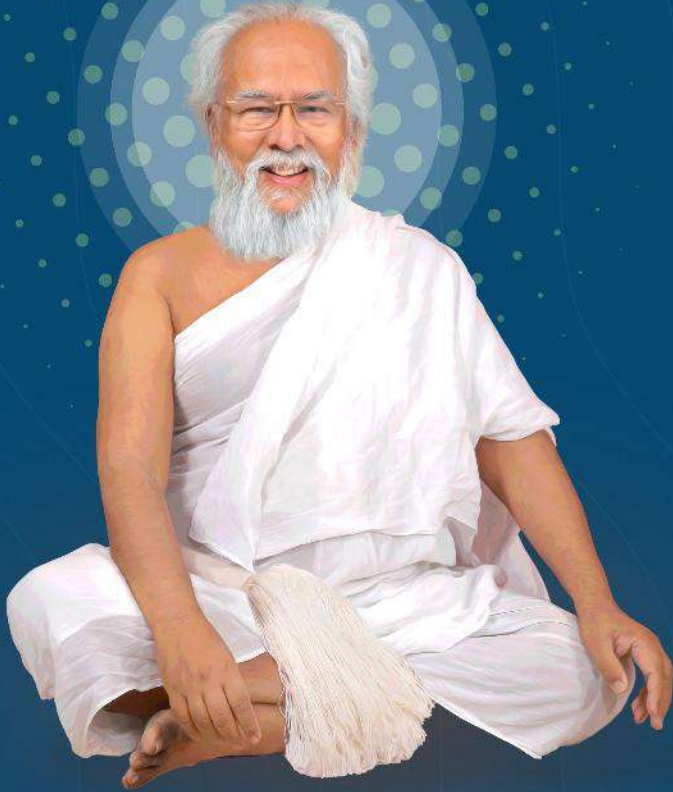
« आ. जयसुंदरसूरि की वंदनावली

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



हेमचंद्रसागर महाराज ने केली रीते वीतती कशे ?
अक न कलपी शकाय अेली व्यक्तितने गुमावी
दीधी... आपणे... समुदाये... संघे... शासने...

आ. नंदीभूषणसूरिनी वंदना शाता

हेमचन्द्रसागर महाराज पर क्या बीतती होगी ?
एक अकलम्य व्यक्ति को खो दिया है...
हमने... समुदाय ने... संघ ने... शासन ने...

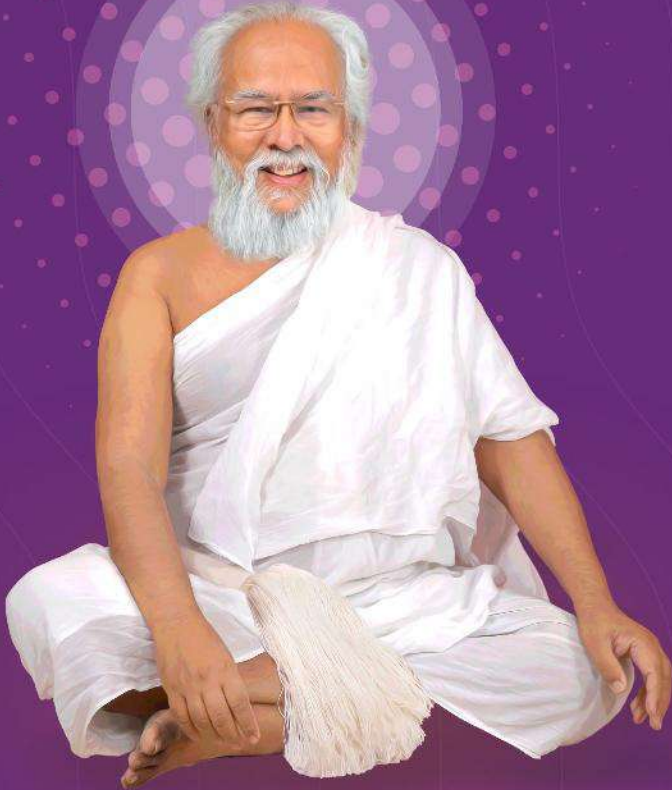
आ. नंदीभूषण सूरि की वंदना शाता

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



अयोध्यापुरम् तीर्थ भेभना व्यक्तित्वनो
परिचय आपे छे. सरण स्वभावी, हमेशां
प्रसन्न मुद्रामां अमे अ पूज्यश्रीने अनेकवार
जोया-भाएया-सांभज्या छे.

« आ. मेघवल्लभसूरिना वंदन

अयोध्यापुरम् तीर्थ उनके व्यक्तित्व
का परिचय देता है । सरल स्वभावी,
सदा प्रसन्न मुद्रा में पूज्यश्री को अनेकबार
देखा-सुना-अनुभव किया ।

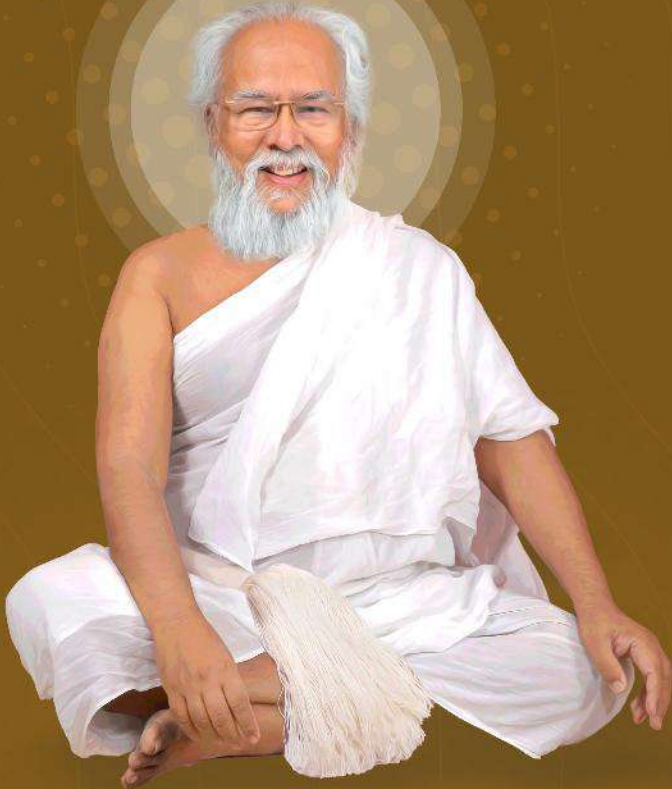
« आ. मेघवल्लभसूरि का वंदन

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शब्दांजलि



बंधु आ. श्री ना सभाचार जली
आंचको लाग्यो. वर्षोथी भेलडी
शब्दमां गुंथायेल व्यक्ति भरी पडी.

« आ. उदयवल्लभसूरिना वंदना

बंधु आचार्य श्री के समाचार
जानकर आघात लगा । वर्षों की
बंधु बेलडी की जोड़ी बिखर गई ।

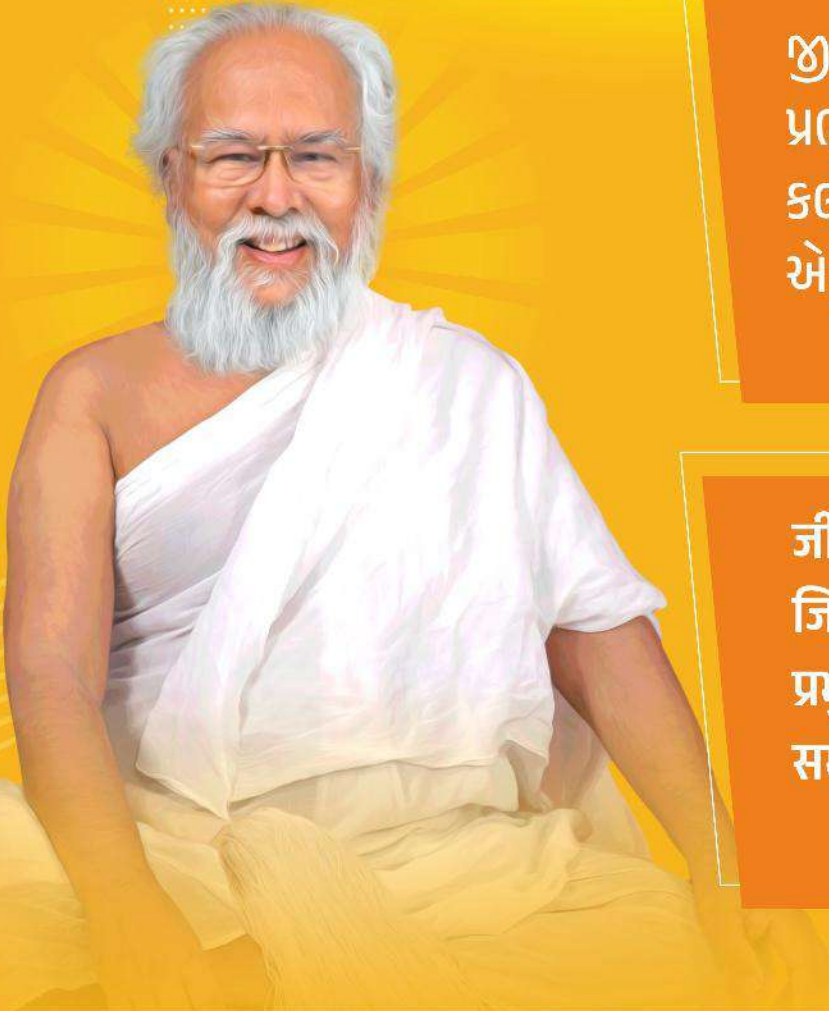
« आ. उदयवल्लभसूरि का वंदन



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. <<<<

शब्दांजलि



જીવનભર સ્વરને સંગીતથી જેમણે
પ્રભુને રીઝવ્યા એમને પ્રભુ પોતાના
કલ્યાણકના દિવસે સમાધિ આપે છે.
એવું અનુભવાય છે...

આ. અજિતયશસૂરિની વંદના

जीवनभर स्वर और संगीत से
जिन्होंने प्रभु को रीझाया, उन्हें
प्रभु ने अपने कल्याणक के दिन
समाधि दी है। ऐसा अनुभव होता है।

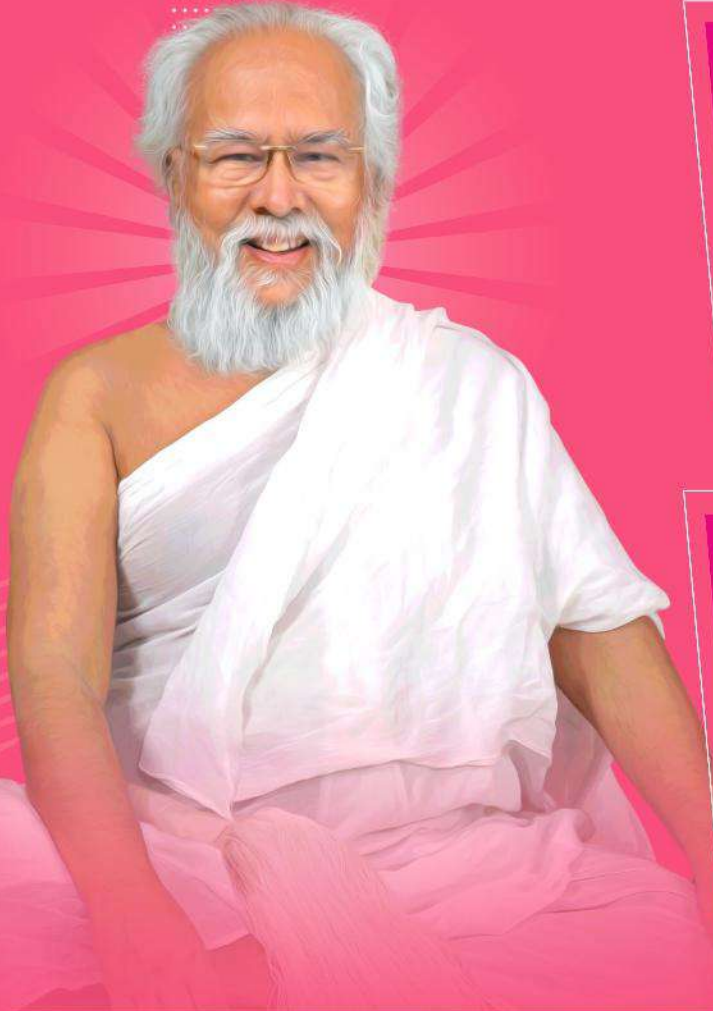
आ. अजितयशसूरि की वंदना



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. <<<

शब्दांजलि



तेओश्री એક ઉત્તમ પ્રકારના આરાધક
હતા... તેઓશ્રીના કંઠમાં મધુરતા હતી.
તેઓ બંને સાથે રહીને ખૂબ શાસન
પ્રભાવક કાર્ય કરી રહ્યા હતા...

આ. વરબોધિસૂરિના વંદન

वो एक उत्तम प्रकार के आराधक थे,
उनके कंठ में मधुरता थी । बंधु बेलड़ी
साथ रहकर बहुत शासन-प्रभावक
कार्य कर रहे थे ।

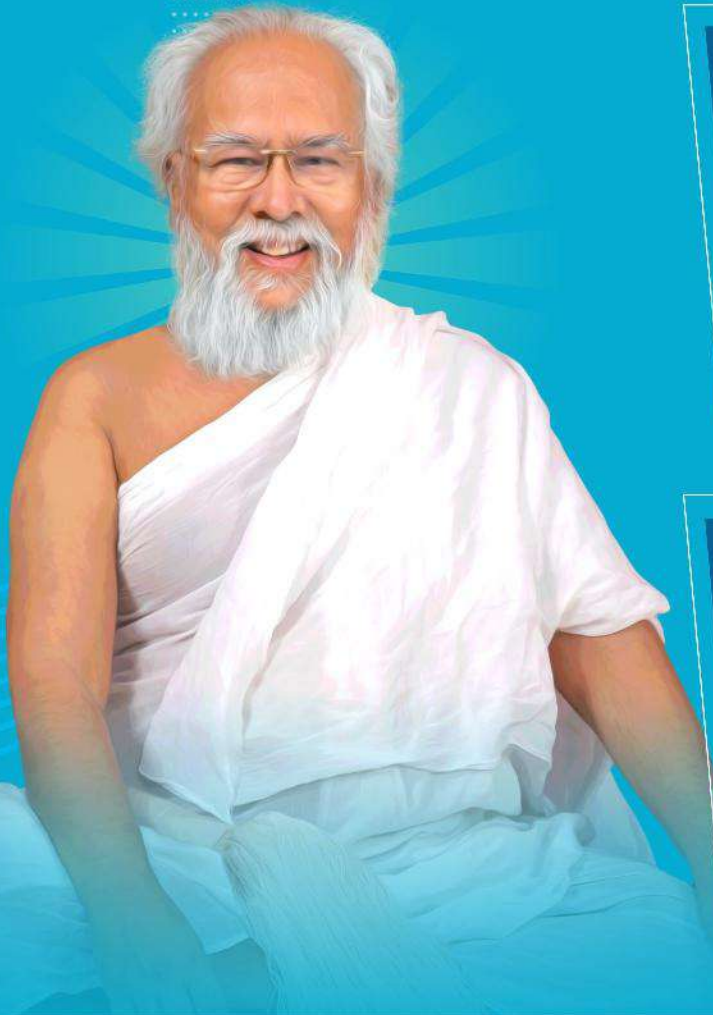
आ. वरबोधिसूरि की वंदना



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. <<<<

शब्दांजलि



शासनना स्तंभ होता... सारा विचारक
होता...! अयोध्यापुरम्नी भेंट जैन
शासनने मणी, ते पण तेओश्रीनो
विचार होतो.

आ. युगचन्द्रसूरिनी वंदना

शासन स्तम्भ थे... अच्छे
विचारक थे... अयोध्यापुरम् की
भेंट जैन शासन को मिली...
वह भी उनका विचार था ।

आ. युगचन्द्रसूरि की वंदना



9424898657



www.bandhubeldi.com



Ayodhyapuram Tirth

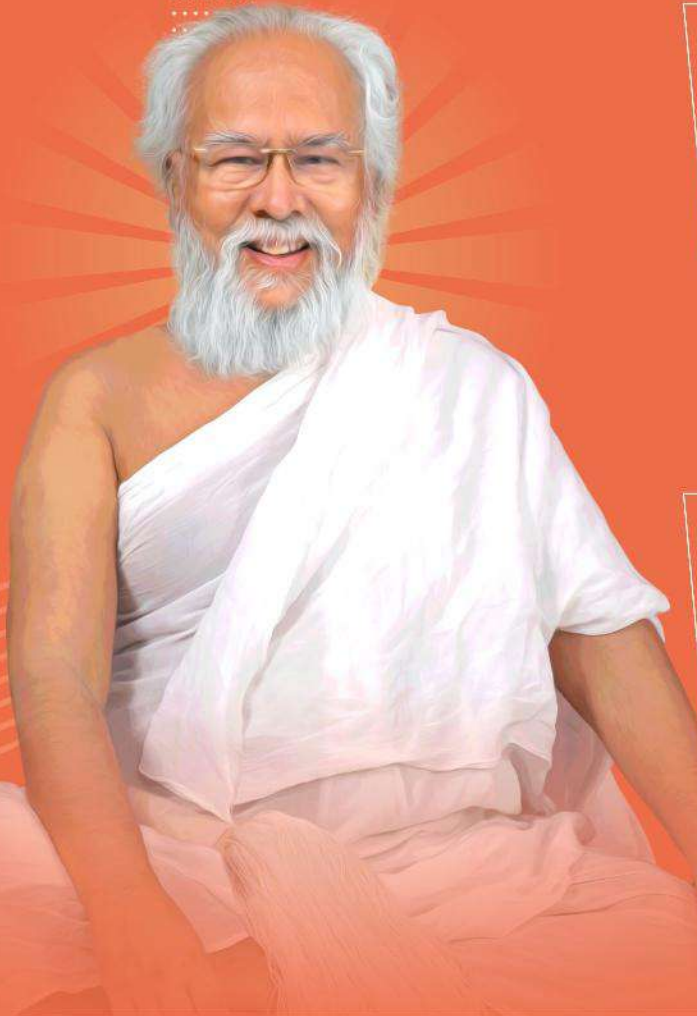
AYODHYAPURAM art.
9424898657



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. <<<

शब्दांजलि



એમનો હાસ્ય નિતરતો વાત્સલ્યભર્યો
ચહેરો આંખ સામે તરવરે છે, ઘણીવાર
તેઓશ્રીના ચરણોમાં ખેસવાનું મળ્યું
તેઓશ્રીની ગુણાનુરાગિતા ગજબની હતી..!

આ. પીયૂષભદ્રસૂરિની વંદના

उनका हास्य छलकता वात्सल्य सभर
चेहरा आँखों के समक्ष तैरता है । कई बार
उनके चरणों में बैठने का सौभाग्य मिला ।
उनकी गुणानुरागिता गजब की थी ।

आ. पीयूषभद्रसूरि की वंदना



9424898657



www.bandhubeldi.com



Ayodhyapuram Tirth

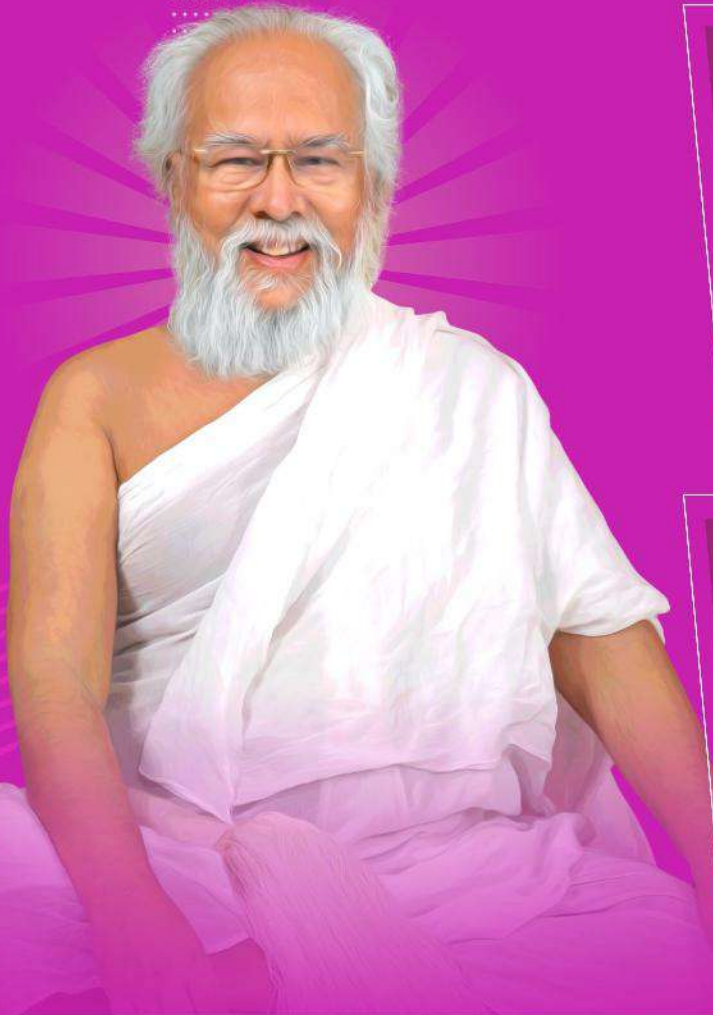
AYODHYAPURAM art.
9424898657



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. <<<<

शब्दांजलि



तेओ स्वप्न दृष्टा होतां. विचारक होतां. आयोजन
कुशल होतां. संयम जुवनमां चुस्त होतां अमनी
अजितशांति सांभलवी अेक ल्हावो हतो. आवा
महापुरुषोनी याद सदैव जुवंत रहेशे.

आ. रत्नचन्द्रसरि, उदयरत्नसूरिना वंदन
- परमाण तीर्थ

वे स्वप्न दृष्टा थे । विचारक थे । आयोजन कुशल
थे । संयम-जीवन में चुस्त थे । उनकी अजित-
शांति सुनना कानों के लिए उत्सव था । ऐसे
महापुरुषों की याद सदैव जीवंत रहेगी ।

आ. रत्नचन्द्रसूरि, उदयरत्नसूरि के वंदन
- वरमाण तीर्थ



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

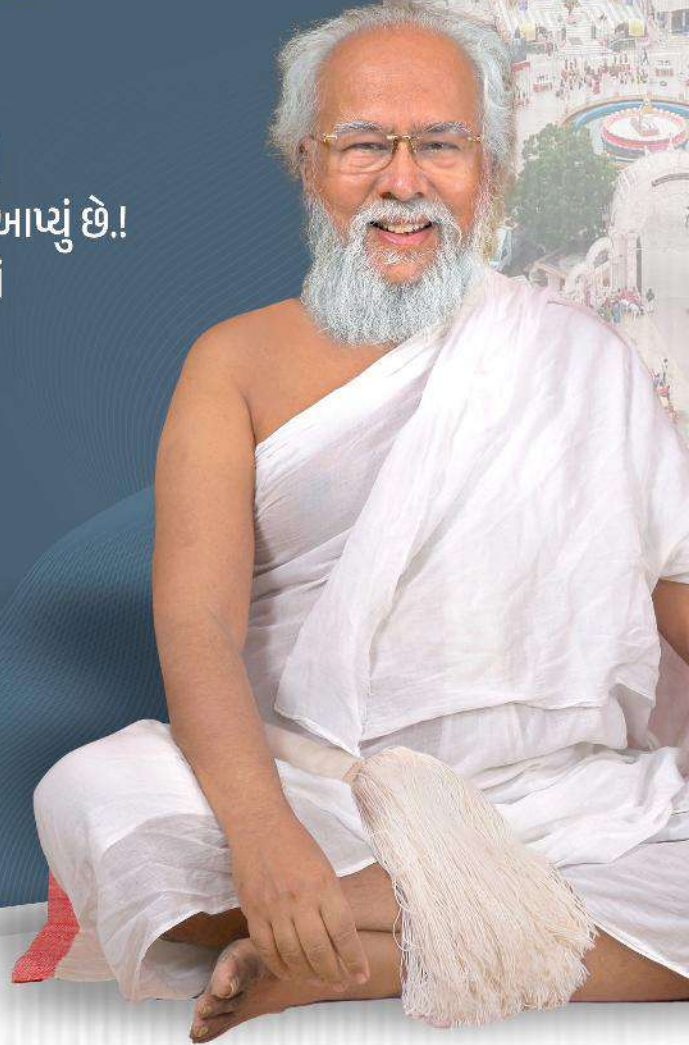
શબ્દાંજલિ

વૈયાવચ્ચ-વ્યક્તિત્વ નિર્માણ-કાર્યદક્ષતાથી
આ પૂજ્ય ગુરુદેવે આપણને/મને ઘણું બંધું આપ્યું છે.
પણ આમ અચાનક ચાલ્યા જવું એ માન્યામાં
ન આવે એવું કદમ છે...

- આ. સાગરચન્દ્રસાગરસૂરિ મ.

વૈયાવચ્ચ-વ્યક્તિત્વ નિર્માણ-કાર્યક્ષમતા
સે પૂજ્ય ગુરુદેવ ને હમ્મેં/મુझे बहुत कुछ
दिया है। इस तरह उनका अचानक
चले जाना अविश्वसनीय है।

-આ. સાગરચન્દ્રસાગરસૂરિ મ.





अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

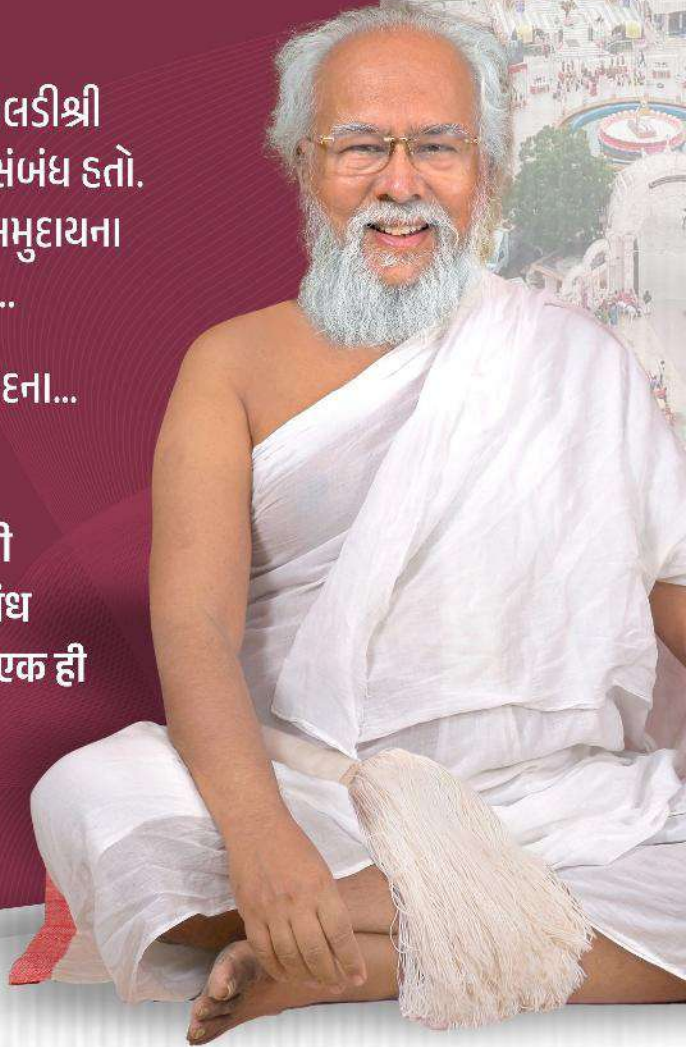
शब्दांजलि

अमारा परम तारक पूज्यपाद गुरुमैया
(पू.पं. श्री चन्द्रशेखर वि. म.सा.) प्रत्ये बंधुबेलडीश्री
ने अत्यंत आदर बहुमान अने भक्तिभर्या संबंध हतो.
पू. गुरुमैया ने आप जन्ने भाईओ ओक ज समुदायना
होईओ तेवा व्यवहार... परस्परनो रह्यो हतो...

- आ. हंसकीर्तिसूरि तथा मुनि हंसबोधिनी वंदना...

हमारे परम तारक पूज्यपाद गुरुमैया
(पू.पं. चन्द्रशेखर वि. म.सा.) से बंधु बेलडी श्री
का अत्यंत आदर-बहुमान और भक्तिपूर्ण संबंध
था । पू. गुरुमैया और आप दोनों भाईयों का एक ही
समुदाय के हो ऐसा व्यवहार... परस्पर रहा ।

-आ. हंसकीर्ति सूरि तथा
मुनि हंसबोधि की वंदना...





अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

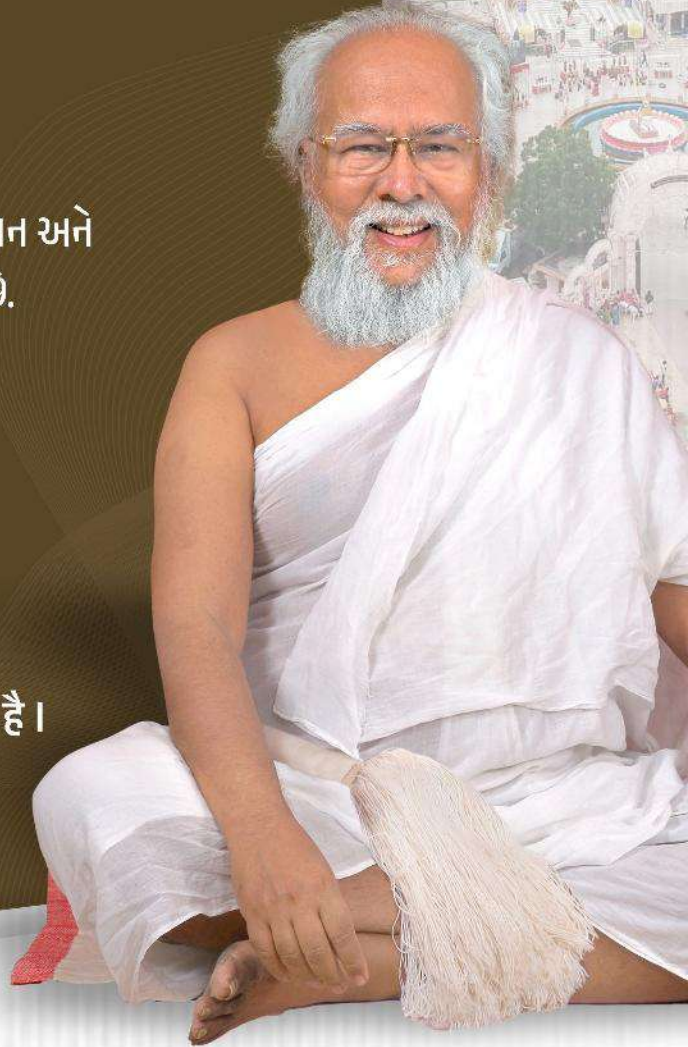
शब्दांजलि

शास्त्रीय संगीतना प्रेमी, सरलस्वभावी
प्रभु भक्तिनी तन्मयता शास्त्रीय रागो पर
भार आपनारा पूज्यश्रीनी विदाय संघ शासन अने
समुदाय माटे न पूरी शकाय तेवी ખોટ પડી છે.

- આ. મુક્તિનિલયસૂરિના વંદન

शास्त्रीय संगीत के प्रेमी, सरल स्वभवी,
प्रभु भक्ति की तन्मयता, शास्त्रीय रागों पर
भार देने वाले पूज्यश्री की बिदाई से संघ,
शासन और समुदाय को अपूरणीय क्षति हुई है ।

- આ. મુક્તિનિલયસૂરિ કે વંદન





अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

पूज्यश्रीनो कंठ अद्भुत હતો.
એવી સરસ સજ્જાયો ગાતા કે
ભલભલાને ડોલાવી દેતાં.

- આ. મલયકીર્તિસૂરિના વંદન

पूज्यश्री का कंठ अद्भुत था ।
ऐसी सरस सज्जाय गाते कि
अच्छे-अच्छे डोल जाते ।

- आ. मलयकीर्तिसूरि के वंदन



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય
શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

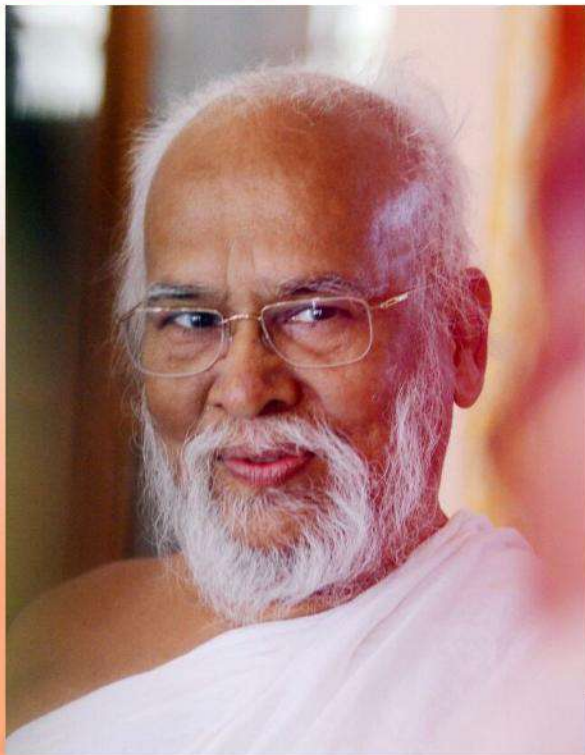


શાસ્ત્રીય સંગીત દ્વારા એમણે
બેજોડ પ્રભુભક્તિ કરી છે.
જિનશાસનમાં સદા માટે
એમની ખોટ સાલસે.

- આ. હંસબોધિસૂરિના વંદન

શાસ્ત્રીય સંગીત દ્વારા
અહોને બેજોડ પ્રભુ ભક્તિ કી હૈ ।
જિનશાસન મેં હમેશા
અનકી કમી ખલેગી ।

- આ. હંસબોધિસૂરિ કા વંદન



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

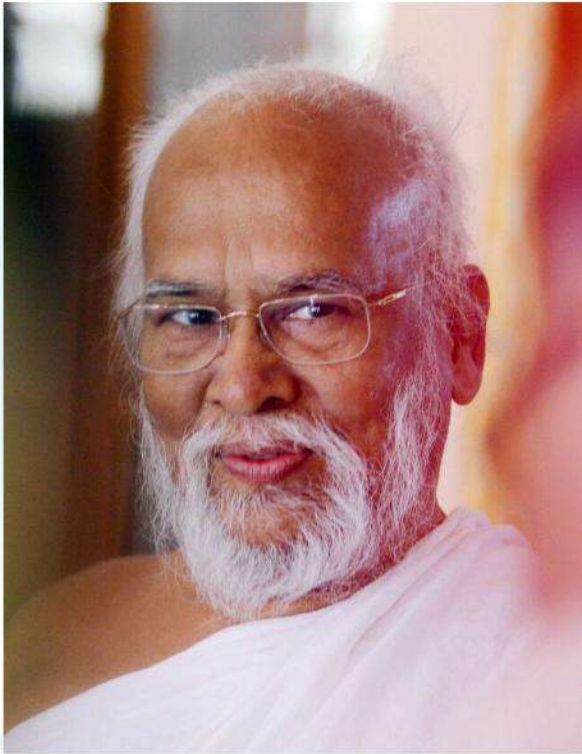


संगीत अने शिष्य घडतर
अे अेमनी आगवी
लाक्षणीकता हती.

- आ. अर्हप्रभसूरि ना वंदन

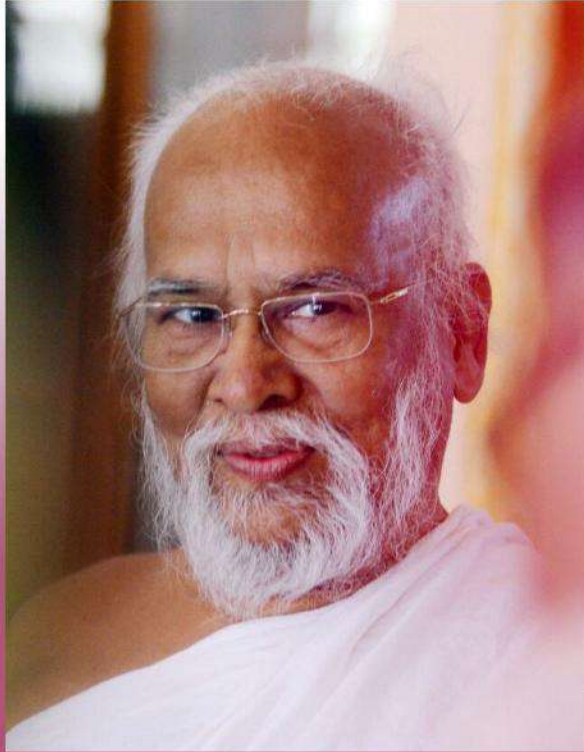
पूज्यश्री की
संगीत और शिष्य-
घड़ाई अद्भुत थी ।

- आ. अर्हप्रभसूरि के वंदन



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય
શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ



ભાઈ છીએ આપણે મોટાભાઈ
ગુમાવ્યાનો અફસોસ આપણને બધાને
ખૂબ છે. હિંમત રાખજો ભાઈ તરીકે
સાથે જ છીએ. બસ...

વધારે નથી લખી શકાતું...

- પૂ. મહાયશવિજયજીની વંદનાવલી

અપને બड़े भाई को खोने का
अफसोस हम सबको खूब है ।
हिम्मत रखिएगा, भाई के रूप में
हम साथ ही है । बस...
अधिक नहीं लिखा जाता ।

- પૂ. મહાયશવિજયજીની વંદનાવલી

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય
શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

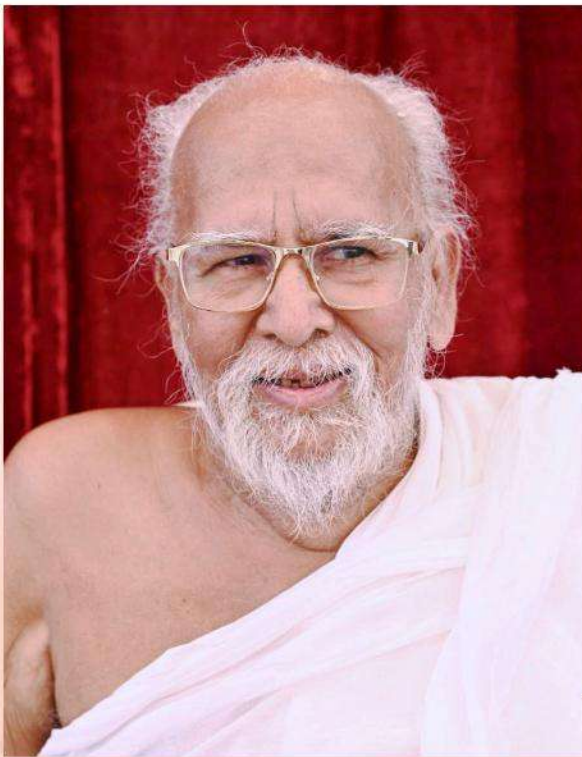


પૂ. શ્રી સંગીતના બેતાજ બાદશાહ હતા.
આપ બંને બંધુ સાથે બેસી જ્યારે
સ્તવનાદિ પદ વગેરે બોલતા-સંભળાવતા
ત્યારે તાનસેનની યાદ તાજી થઈ જતી.
સ્નેહાળ પ્રકૃતિ દયા-પરોપકાર-સહાય
માટે તેઓશ્રી હંમેશા તત્પર રહેતા.

- પં. હર્ષબોધિવિજયજી

પૂ. શ્રી સંગીત કે બેતાજ બાદશાહ છે ।
આપ દોનોં બંધુ સાથે બેઠકર જબ
સ્તવનાદિ પદાદિ બોલતે-સુનાતે
તબ તાનસેન કી યાદ તાજા હો જાતી ।
સ્નેહાળ પ્રકૃતિ-દયા-પરોપકાર-સહાય
કે લિએ પૂજ્યશ્રી સદા તત્પર રહેતે ।

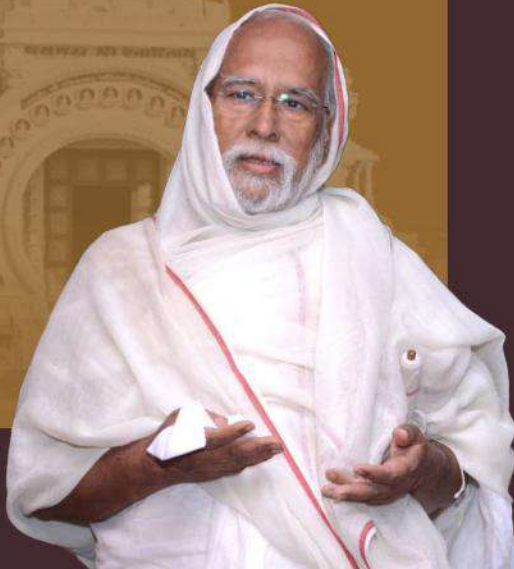
- પં. હર્ષબોધિવિજયજી





अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार
तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न,
बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. शब्दांजलि



1. अंतरना तारने ऋणऋणापी हे
अेवी छे आ घटना
2. शरीरना 3॥ करोड इंपाडाने
ध्रुजापी हे छे, आ घटना
3. तन-मन-जुपनमां शून्यावकाश
सर्ज भूके छे, आ घटना
हृदय पोकारी कहे छे, 'कोई आपणा
गुरुदेवने पाछा ओलावो'

- आ. लब्धियन्द्रसागरसूरि

1. अंतर के तार को झनझना दे,
ऐसी है यह घटना
2. शरीर के 3 1/2 करोड़ रोम को
कंपा देती है, यह घटना
3. तन-मन-जीवन में शून्यावकाश का
सर्जन कर देती है, यह घटना
हृदय पुकारता है, 'कोई अपने
गुरुदेव को फिर बुलाओ'

- आ. लब्धियन्द्रसागरसूरि

ayodhyapuramtirth 9424898657

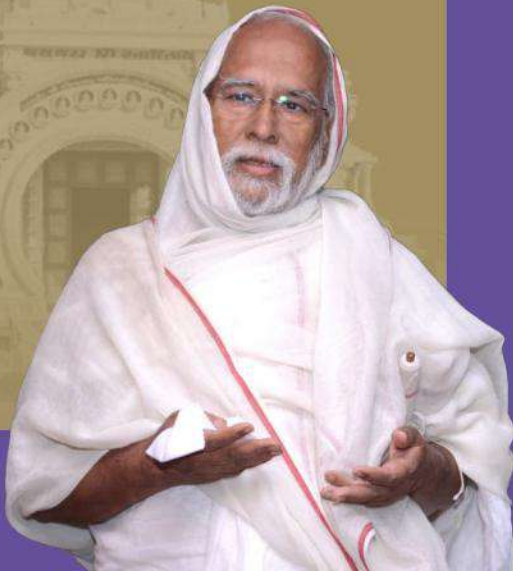
www.bandhubelidi.com ayodhyapuramtirth@gmail.com



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार
तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न,
बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



तेओश्रीओ साधुओना
घऽतरमां-योग-क्षेममां जे
भोग आप्यो छे ते
अकल्पनीय-
अविस्मरणीय रहेशे.

- आ. नयचंद्रसागरसूरि

उन्होंने साधुओं की घड़ाई
में योग क्षेम में जो भोग दिया है,
वह अकल्पनीय है और
अविस्मरणीय रहेगा ।

- आ. नयचंद्रसागरसूरि

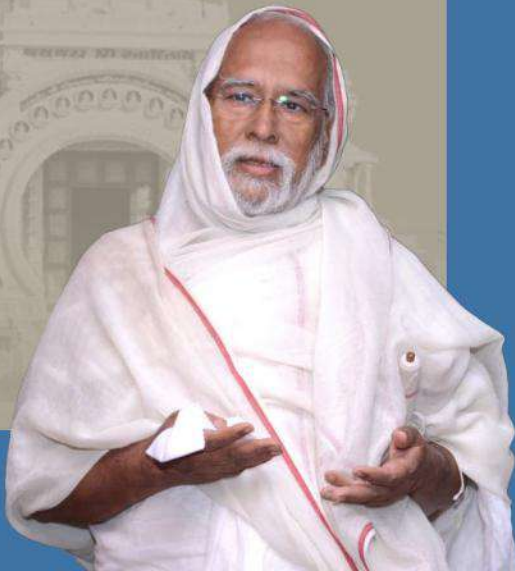
ayodhyapuramtirth 9424898657

www.bandhubeldi.com ayodhyapuramtirth@gmail.com



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार
तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न,
बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. शब्दांजलि



आपणा शताधिक साधु भगवंतोना
मार्गदर्शक तेओश्री होता.
चारित्रपालनना परम प्रेरक होता.
जिन शासना गमे तेवा कपरा
कार्य करता होय ते समये पण
साधुभगवंतोनुं सतत निरीक्षण
करनार तेओश्री होता.

- आ. अक्षयचन्द्रसागरसूरि

अपने शताधिक साधु भगवंतों के
पूज्यश्री मार्गदर्शक थे । चारित्र-
पालन के परम प्रेरक थे । जिनशासन
के कितने भी कठिन कार्य करते हैं ।
तब भी साधु भगवंतों का सतत्
निरीक्षण करने वाले पूज्यश्री थे ।

- आ. अक्षयचन्द्रसागरसूरि

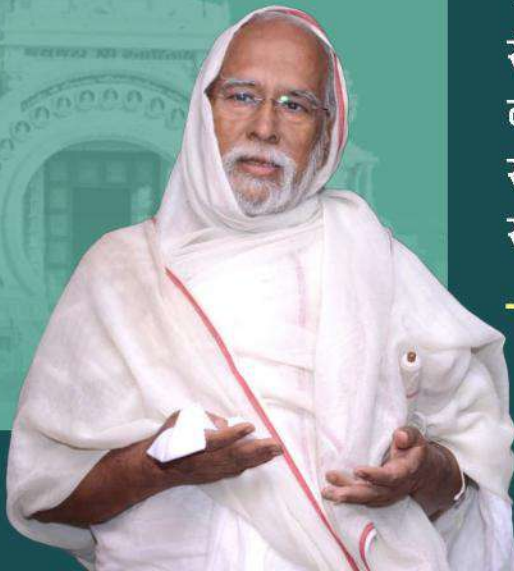
[f](https://www.facebook.com/ayodhyapuramtirth) [i](https://www.instagram.com/ayodhyapuramtirth) [y](https://www.youtube.com/ayodhyapuramtirth) [t](https://www.tiktok.com/ayodhyapuramtirth) [9424898657](https://www.whatsapp.com/channel/00299999999999999999)

www.bandhubeldi.com ayodhyapuramtirth@gmail.com



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार
तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न,
बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. शब्दांजलि



गुरुमां (पं. श्री चन्द्रशेखर वि.म.)
सांजना विहार करीने तेमने मणेला
त्यारे रात्रे प्रतिक्रमणमां 'जुवडा तारे
जावुं जरुर मरी...' सज्जाय कोकीलकंठे
प्रकाशे अने गुरुमानी आंभोथी अश्रुधारा
वहे. आवी अद्भुत प्रभु भक्ति, नवकार
साधना, तीर्थ निर्माण वगैरे शासनना
तथा स्व आराधना अनेक कार्यो कर्या.

- पं. जयभूषण विजयना वंदन

गुरु मां (पं. श्री चन्द्रशेखर वि.म.) शाम को
विहार कर उन्हें मिले तब रात्रि प्रतिक्रमण में
'जीवड़ा तारे जावुं जरुर मरी' सज्जाय कोकिलकंठ
से गाई और गुरु मां की आँखों से अश्रुधारा
बहती रही । ऐसी अद्भुत प्रभु भक्ति, नवकार-
साधना, तीर्थ निर्माण आदि शासन के तथा
स्व आराधना के अनेक कार्य किए ।

- पं. जयभूषण विजय के वंदन

[f](https://www.facebook.com/ayodhyapuramtirth) [i](https://www.instagram.com/ayodhyapuramtirth) [y](https://www.youtube.com/ayodhyapuramtirth) [in](https://www.linkedin.com/company/ayodhyapuramtirth) [tiktok](https://www.tiktok.com/@ayodhyapuramtirth) [whatsapp](https://www.whatsapp.com/channel/ayodhyapuramtirth) [telegram](https://www.telegram.me/ayodhyapuramtirth) [viber](https://www.viber.com/ayodhyapuramtirth) [zapier](https://www.zapier.com/ayodhyapuramtirth) [slack](https://www.slack.com/team/ayodhyapuramtirth) [discord](https://www.discord.com/ayodhyapuramtirth) [skype](https://www.skype.com/people/ayodhyapuramtirth) [signal](https://www.signal.me/ayodhyapuramtirth) [threemaat](https://www.threemaat.com/ayodhyapuramtirth) [whatsapp](https://www.whatsapp.com/channel/ayodhyapuramtirth) 9424898657

www.bandhubeldi.com ayodhyapuramtirth@gmail.com

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.



શબ્દાંજલિ

અયોધ્યામાં 'રામચંદ્રજી' બિરાજમાન
થયા ને અયોધ્યાપુરમના રામ વનવાસે
ચાલી ગયા. પરમકૃપાનિધાન પૂ.આ.ભ.
શ્રીમદ્ જિનચન્દ્ર સાગરસૂરીશ્વરજી મ.સા.
અયોધ્યાપુરમના 'રામ' અને
અમારા માટે 'આરામ' હતા.

- મુનિ. હિતરતિ વિજયની વંદના-વાપી

અયોધ્યા મેં 'રામચંદ્રજી' વિરાજમાન
હુએ ઔર અયોધ્યાપુરમ્ કે રામ વનવાસ
ચલે ગાએ । પરમકૃપા નિધાન પૂ.આ.ભ.
શ્રીમદ્ જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.
અયોધ્યાપુરમ્ કે 'રામ' ઔર
હમારે લિએ 'આરામ' થે ।

- મુનિ. હિતરતિ વિજય કી વંદના-વાપી



AYODHYA PURAM

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.



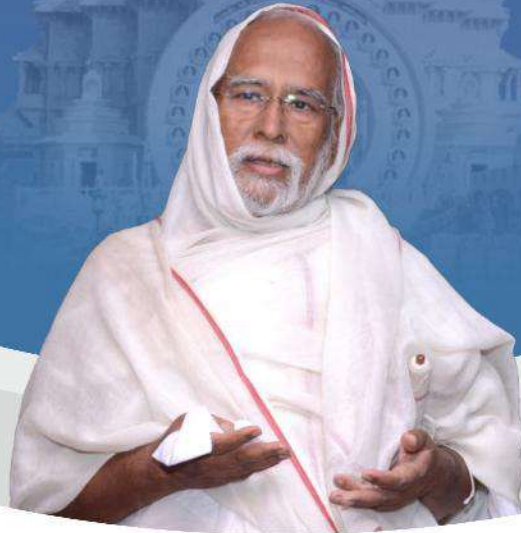
શબ્દાંજલિ

પ્રભુ અને મહાપુરુષોની પ્રત્યેની ભક્તિતથા
ભીનું હૈયું અને કલિકાલે પણ એક મન
અને ખોળીયા અલગવાળી બંધુબેલડી હોઈ
શકે છે એનું ઝળહળતું ઉદાહરણ સમા એ
પ.પૂ.આચાર્ય ભગ. જ્યાં સંચર્યા હોય,
બિરાજિત થયા હોય ત્યાંથી અમોને
આરાધનાનું બળ પુરુ પાડજો.

- આ. તપોરત્ન વિજયની ભાવભીની વંદના

પ્રભુ और महापुरुषों के प्रति की भक्ति से भीगा
हृदय और कलिकाल में भी मन एक और
तन अलगवाली बंधु बेलडी हो सकती है,
इसका जीवंत उदाहरण थे प.पू.आचार्य भगवंत ।
जहाँ पधारे हो, विराजित हुए हो,
वहाँ से हमें आराधना का बल प्रदान कीजिएगा ।

- આ. તપોરત્નવિજય કી ભાવભીની વંદના



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.



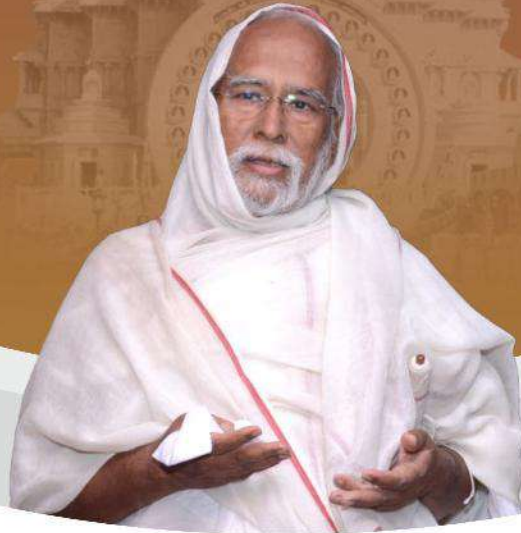
शब्दांजलि

पूज्यश्री ष्णालनो हरियो हता. ज्यारे पण
पूज्यश्रीने मणवानुं-वंदनार्थे आववानुं थयुं
त्यारे स्व-परना भेद विना पूज्यश्री वात्सल्यथी
सहुने न्दपरावता हता. तेमनो कंठ पण अद्भुत
हतो. संगीतना निष्णात पूज्यश्री प्रभुभक्तिमां
भूष तल्लीन रहेता पण माएया छे.

- हृदयवल्लभसूरिनी वंदना

पूज्यश्री वात्सल्य का समंदर थे । जब भी
पूज्यश्री से मिलने, वंदन के लिए आने का हुआ,
तब स्व-पर के भेद बिना सबको वात्सल्य से
नहला देते थे । उनका कंठ भी अद्भुत था ।
संगीत के निष्णात पूज्यश्री की प्रभु भक्ति में
खूब तल्लीनता को भी निहारने का अवसर मिला है ।

- हृदयवल्लभसूरि की वंदना



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.



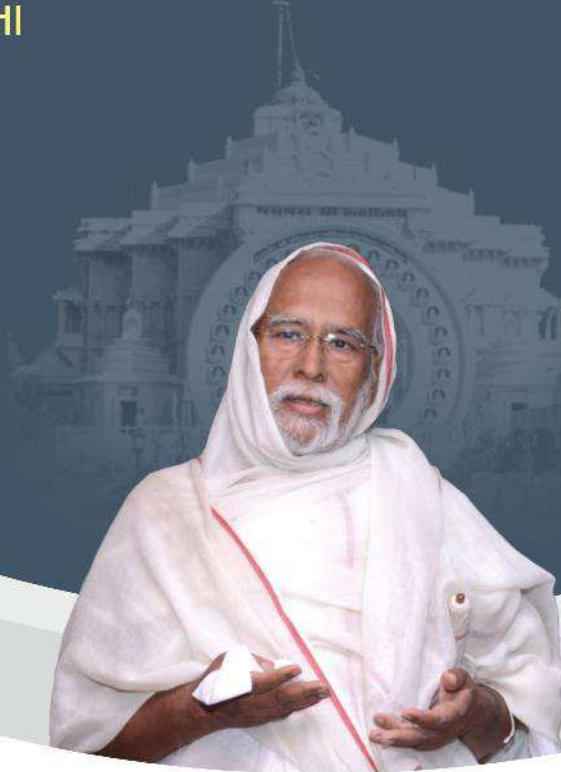
શબ્દાંજલિ

પ્રસન્ન ચહેરો, મધુર વાણી, આરપાર નજર
અને ધારદાર તેજસ્વિતા આંખ સામે હજુ
તરવરે છે... શાંત છતાં ઊંડી પ્રભાવકતાના
પાઠ મૂક રીતે શીખવાડતા પૂજ્યશ્રી સાથેની
ક્ષણો સ્મૃતિ ડાયરીમાં કાયમ અકબંધ રહેશે.

- આ. સંયમબોધિસૂરિની વંદના

પ્રસન્ન ચેહરા, મધુર વાણી, આર-પાર નજર और
धारदार तेजस्विता आँखों के सामने अभी भी
तैरती है। शान्त पर गहरी प्रभावकता का पाठ
मौन से सीखाने एवं पूज्यश्री के साथ बीताए क्षण
स्मृति डायरी में सदा अंकित रहेंगे।

- આ. સંયમબોધિસૂરિની વંદના



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

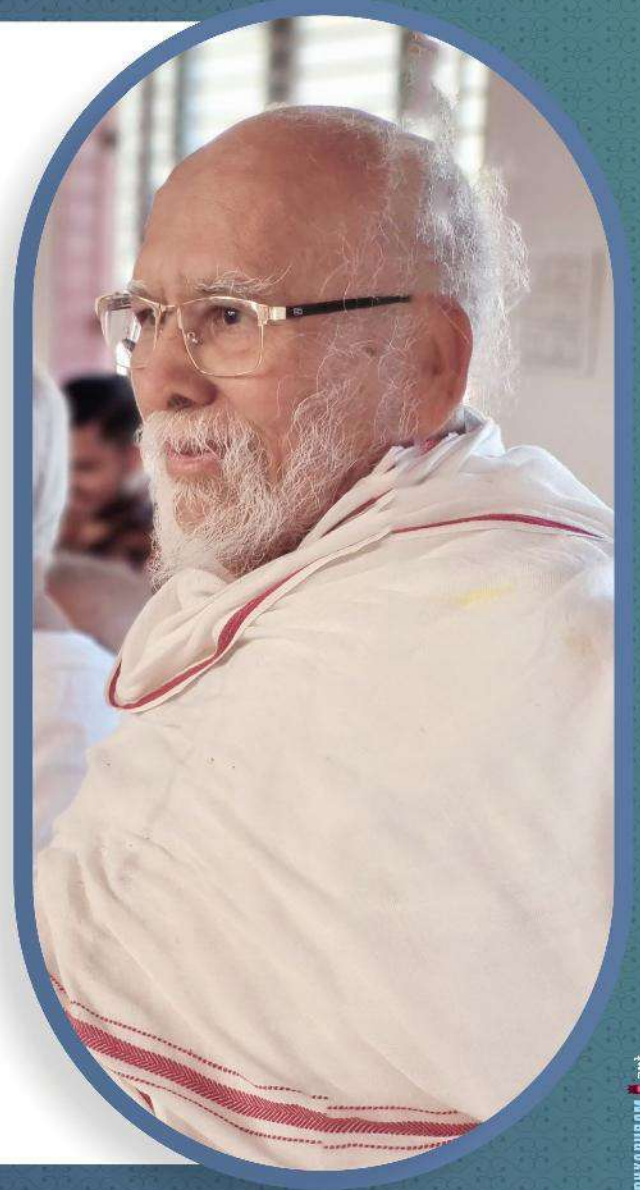


प्रभण पारिवारिक भावना साथे
लागणीशीलता अने सामुदायिक
देखरेख अने जिनशासननी आगवी
भक्ति वि. अनेक विध गुणो
अकथ्य-अगम्य-अलेख्य छे.

- मुनि. सुप्रभसागरनी वंदना

जिनशासन के प्रति पू.आचार्य श्री
की प्रबल पारिवारिक भावना के साथ
लगाव अद्भुत रहा । उनका
सामुदायिक देखरेख और जिनशासन
की अनोखी भक्ति आदि अनेक विध
गुण अकथ्य-अगम्य अलेख्य है ।

- मुनि. सुप्रभसागर की वंदना



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



पू. अशोक म. नी दीक्षा पछी जे जिनचंद्र म. नी दीक्षा न थए होत तो हेमचंद्र म. नी पए दीक्षा न थात, अने ते भन्नेनी दीक्षा विना आपए। परिवारमां सागर-पूर्णा-लब्धि म. अने कुवलय अने विरागलयानी अने मारी दीक्षा थए, मूणमां जेधअे तो जिनचन्द्र म. नी दीक्षा छे.

- मुनि. सत्त्वचन्द्रसागर म.सा.
(५ भाईओमां सौथी मोटा भाई म.)

पू. अशोक म. की दीक्षा के बाद यदि जिनचंद्र म. की दीक्षा नहीं हुई होती तो हेमचंद्र म. की भी दीक्षा नहीं होती और दोनों की दीक्षा के बाद परिवार में सागर-पूर्ण-लब्धि म. और कुवलय-विरागलया और मेरी दीक्षा हुई। मूल में देखें तो जिनचन्द्र म. की दीक्षा है।

- मुनि. सत्त्वचन्द्रसागर म.सा.
(५ भाईयों में सबसे बड़े भाई म.)



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

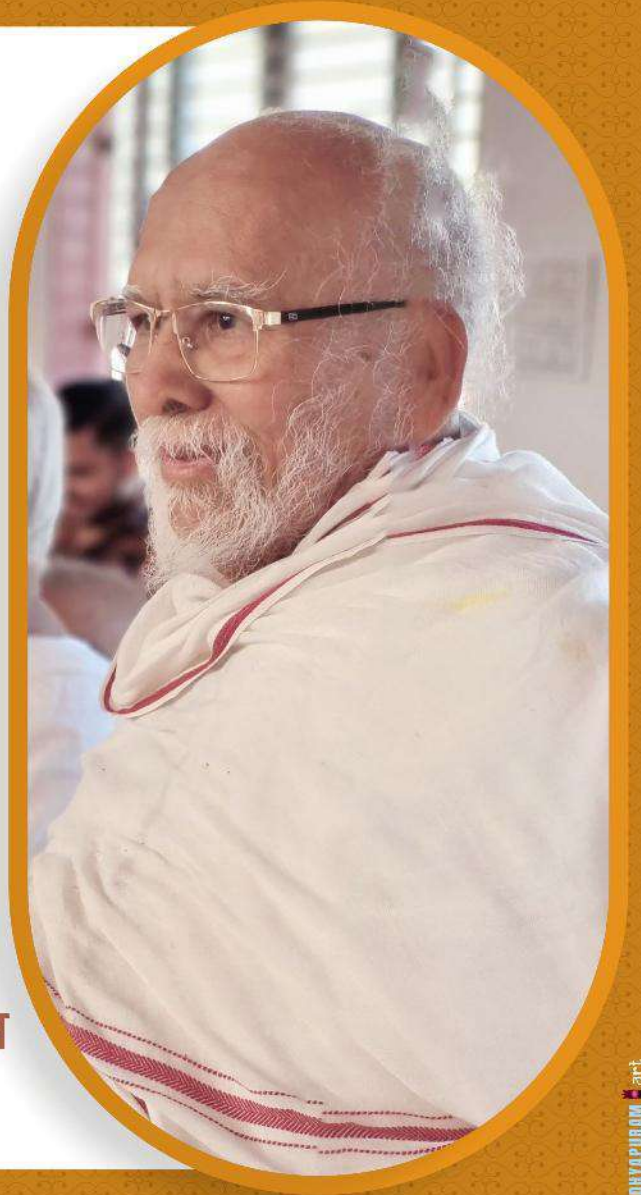
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



श्रमण परम्परा के सिरमौर बंधु बेलडी
पू. आचार्यश्री की कमी न केवल जैन
समाज की बल्कि सम्पूर्ण मानव
समाज के लिए एक बड़ी क्षति है।
साधु संतों का जीवन देश, धर्म और
संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन के
लिए समर्पित होता है। उन्हें किसी
धर्म, जाति और समुदाय विशेष
की परिधि में कैद नहीं किया जा
सकता है। पूज्य आचार्यश्री भी
एक ऐसी ही हस्ती थे।

अनन्तश्री विभूषित महामण्डलेश्वर
स्वामी चिदम्बरानन्द सरस्वतीजी महाराज
पञ्चायती अखाड़ा महानिर्वाणी



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



એમનો સ્વભાવ એટલો ભાવજ્ઞ કે આવનાર
વ્યક્તિનો મનોભાવ તર્ત જ પારખી જતાં. જ્યારે
જ્યારે મળ્યો ત્યારે મેં જોયું છે કે એમના
મુખારવિંદ માંથી સ્મિત ટપકતું જ હોય.
જૈન સમાજ કે જૈન શાસનની જ નહીં પણ સંપૂર્ણ
હિન્દુ સમાજની અને ભારતીય સંસ્કૃતિની ઊંડી
ચિંતા એમની વાતચીતમાં ઊભરતી.

- **કૌશિક મહેતા** (ઓસ્ટ્રેલિયા) અમદાવાદ, VHP

उनका स्वभाव इतना भावज्ञ था कि आने
वाले व्यक्ति के मनोभाव तुरंत परख लेते ।
जब-जब मिला मैंने देखा कि उनके मुखारविंद
से सतत स्मित टपकता ही रहता । जैन समाज
या जैन शासन ही नहीं पर संपूर्ण हिन्दू समाज
और भारतीय संस्कृति की गहरी चिंता
उनकी बातों में उभरती ।

- **कौशिक मेहता** (आस्ट्रेलिया) अहमदाबाद VHP



AYODHYAPURAM
9424898657



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

जैनाचार्य पूज्य जिनचन्द्रसागर सूरीजी
म.सा. जैन शासन को श्रृंगार थे । अमूल्य
अलंकार समान थे । पू. गुरुदेव ज्ञान,
दर्शन, चारित्र और तप के परम आराधक
यशस्वी जीवन और वाणी के स्वामी थे ।
जैन शासन का ध्वज हमेश लहराते रखने में
पू. गुरुदेव का अनन्य योगदान था ।
महावीर के मार्ग को पूज्यश्री ने सच्चे अर्थ में
दीप्तमान किया है ।

- प्रकाश भाई लक्ष्मीचंद ध्रुव, लींबडी

जैनाचार्य पूज्य जिनचन्द्रसागरसूरीजी
महाराज साहेब जैन शासननो शरणार
हता. अमूल्य धरेणां समान हतां. पू. गुरुदेव
ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तपना परम
आराधक, यशस्वी ज्ञुपन अने वाणीना
स्वामी हतां. जैन शासननो ध्वज हमेशा
लहरातो राजवामां पू. गुरुदेवनो अनन्य
ज्ञाणो रहेलो छे. महावीरना मार्गने
पूज्यश्रीअे साया अर्थमां दिपावेल छे.

- प्रकाशभाइ लक्ष्मीचंद ध्रुव, लींबडी



शब्दांजलि



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

पू.आचार्यश्री अंतिम साँस तक
जिनशासन की सेवा में तत्पर रहे ।
उनकी अद्भुत परिकल्पना जैन
आर्य तीर्थ अयोध्यापुरम्...
जिनशासन सेवा और परमात्मा
भक्ति की समाज को अनुपम
धरोहर है । उनका तप, आराधना
और भक्ति प्रभावक तपस्वी
जीवन युग-युग तक संयमपंथी
वीतरागी आत्माओं का पथ
प्रदर्शन करता रहेगा ।

- **चेतन्य कुमार काश्यप**
सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्यम मंत्री
म.प्र. शासन
राष्ट्रीय परामर्शदाता
अ.भा. त्रिस्तुतिक जैन श्री संघ



शब्दांजलि



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

આચાર્ય ભગવંત શ્રી જિનચન્દ્ર
સૂરીશ્વરજી મહારાજા કે જાને સે
ઁક બડી ક્ષતિ હુઈ હૈ, પરન્તુ ઈશ્વર
કી ગતિ ન્યારી હૈ, જો જન્મતા હૈ વો
જાતા હી હૈ, પરન્તુ વો ઁસે વિરલ
થે । જિન્હોને જન્મ લેકર ધર્મ
સમાજ કે લિઁ સમર્પિત હોકર લોગોં
કો જ્ઞાન દેકર દુઃખ દૂર કિયા હૈ ।

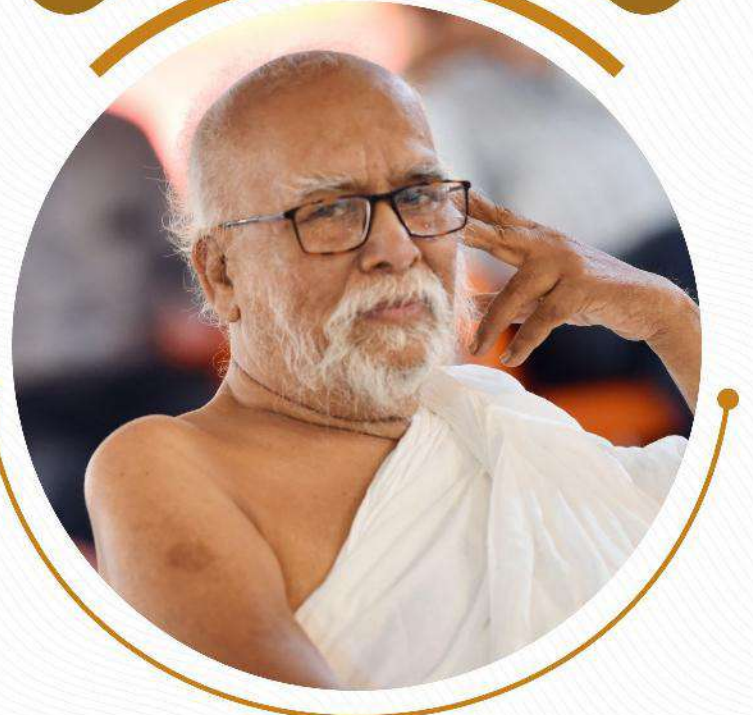
અશોક રાવલ

ક્ષેત્ર મંત્રી, વિશ્વ હિન્દૂ પરિષદ, ગુજરાત

આચાર્ય ભગવંતશ્રી જિનચંદ્ર
સૂરીશ્વરજી મહારાજાના જવાથી ઁક
મોટી ખોટ પછી છે. પરંતુ ઇશ્વરની
ગતિ ન્યારી છે. જે જન્મે છે તે જાય છે
પરંતુ તેઓ વિરલા છે, જેઓ જનમ લઇ
પોતે ધર્મ-સમાજ માટે ધસાઇ લોકોને
જ્ઞાન આપી દુઃખ દૂર કરે છે.

અશોક રાવલ

ક્ષેત્ર મંત્રી, વિશ્વ હિન્દૂ પરિષદ, ગુજરાત



શબ્દાંજલિ



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

આજ મી ઁનકા મધુર-સ્વર-
મીઠાસ ગુંજતી હૈ । પ્રાચીન
પરંપરાઓં ઔર આચારોં પર
ઁનકા ઢુકાવ થા । અત્યન્ત
સરલ, નિખાલસ, પાપમીરુ
ઔર શાસન સમર્પિત
ઁનકા વ્યક્તિત્વ થા ।

**શાહ અનિલ દલપતલાલ
પ્રેમચંદભાઈ કે વંદન**

આજે પણ ઁમનો મધુર સ્વર-
મીઠાશ ગૂંજે છે. પ્રાચીન પરંપરાઓ
અને આચારો ઉપર તેમનો ઝોક હતો.
અત્યંત સરલ, નિખાલસ, પાપભીરૂ અને
શાસન સમર્પિત તેમનું વ્યક્તિત્વ હતું.

**શાહ અનિલ દલપતલાલ
પ્રેમચંદભાઈના વંદન**



શબ્દાંજલિ

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.



शब्दांजलि



सेवक उत्तमचंद की सविनय वंदनावली

एक उत्तम आराधक-प्रभावक और शासन प्रेमी महात्मा की अपूरणीय क्षति शासन को हुई है। पूज्यश्री का शासनराग अप्रतिम था। अनेक गुणों के धारक पूज्यश्री का अत्यंत निर्मल जीवन हमारे सबके लिए प्रेरणादायक है।

सेवक उत्तमचंदनी सविनय वंदनावली

એક ઉત્તમ આરાધક-પ્રભાવક અને શાસનપ્રેમી મહાત્માની અપૂરણીય ક્ષતિ શાસનને થઈ છે. પૂજ્યશ્રીનો શાસનરાગ અપ્રતિમ હતો. અનેક ગુણોના ધારક પૂજ્યશ્રીનું અત્યંત નિર્મળ જીવન અમારા સૌ માટે પ્રેરણાદાયક છે.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



महेन्द्रभाई एम. शाह

प्रमुख श्री, समग्र जैन श्वे.मू.पू.तपागच्छ महासंघ राजनगर अहमदाबाद

प.पू.आ.म. श्री जिनचन्द्रसागरसूरि महाराजा की शासन भक्ति, शासन सुरक्षा की तड़प और अयोध्यापुरम् में गुरुकुल के कार्य शासन में सदा जगमगाते रहेंगे। अयोध्यापुरम् में श्री आदिनाथ प्रभु की शिलापूजन से प्रतिष्ठा तक के सभी कार्यों के पूज्यश्री साक्षी एवं कर्णधार थे।

महेन्द्रभाई एम. शाह

प्रमुखश्री, समग्र जैन श्वे.मू.पू. तपागच्छश्री महासंघ-राजनगर, अमदावाद.

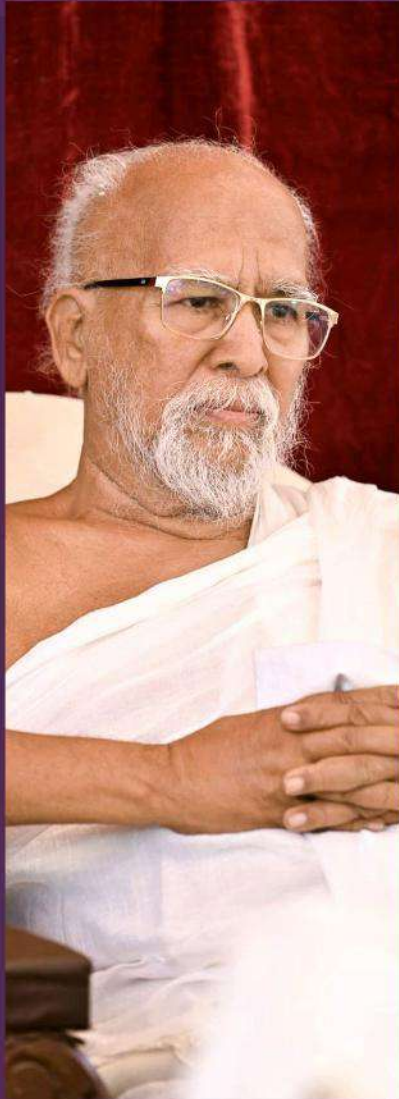
प.पू.आ.म. श्री जिनचन्द्रसागरसूरि महाराजानी शासन प्रत्येनी भक्ति, शासन सुरक्षानी दाऊ तथा अयोध्यापुरम् में गुरुकुलना कार्यो शासन में सदाय ऊण्डणता रहेसे. अयोध्यापुरम् में श्री आदिनाथ भगवाननी शिला पूजनथी प्रतिष्ठा सुधीना सधणा कार्योना पूज्यश्री साक्षी तथा सुकानी हता.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



संवेगभाई लालभाई के 1008 बार वंदना...

प्रमुख आणंदजी कल्याणजी पेढी...

उनके व्यक्तित्व की अनोखी विशेषता-परमात्मा की भक्ति में स्वयं डूब जाए और उपस्थित भावुक भक्तों को भी जिन-भक्ति की गंगा में डुबो दे। दोनों परम पूज्य आचार्य भगवंतों से मुझे सदा सुंदर मार्गदर्शन मिलता रहा। कोरोना महामारी के काल में भी साहेब से संपर्क रहता और शासनलक्षी बहुत बातें होती। ऐसे प्रभावक आचार्य भगवंत की आत्मा जहाँ भी हो, वहाँ मोक्षमार्ग को प्राप्त करें और निर्वाण पद तक पहुँचें, ऐसी शासनदेव को प्रार्थना के साथ हृदयपूर्वक शोकांजलि अर्पण करता हूँ।

संवेगभाई लालभाईना 1008 बार वंदना...

प्रमुख आणंदजी कल्याणजी, पेढी...

એમના વ્યક્તિત્વની આગવી વિશેષતા પરમાત્માની ભક્તિમાં પોતે રસતરબોળ બની જાય અને ઉપસ્થિત ભાવુક ભક્તોને જિનભક્તિની ગંગામાં ડુબાવી દે ! બંને પરમ પૂજ્ય આચાર્ય ભગવંતો પાસેથી મને કાયમ સુંદર માર્ગદર્શન મળતું હતું. કોરોના મહામારીના કાળમાં પણ સાહેબ સાથે સંપર્કમાં રહેતો અને શાસનલક્ષી ઘણી વારો થતી. આવા પ્રભાવક આચાર્ય ભગવંતો આત્મા જ્યાં પણ હોય ત્યાં મોક્ષમાર્ગને પ્રાપ્ત કરે અને નિર્વાણ પદ સુધી પહોંચે એવી શાસન દેવને પ્રાર્થના સાથે હૃદયપૂર્વક શોકાંજલિ અર્પણ કરું છું.

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.



शब्दांजलि



प्रभुलाल के. संघवी

महापुरुष अपनी हाजिरी में अपने में रही शक्ति का शासन के लिए उपयोग कर शासन-कार्यों की रोशनी बढ़ाते हैं। प.पू. आचार्यश्री जिनचन्द्रसागरजी महाराज साहेब ने जीवन पर्यन्त शासन की सेवा की। अयोध्यापुरम् तीर्थ को विश्व प्रख्यात बनाया। उनमें रहे ज्ञान, ध्यान-आराधना से जिनशासन में ख्याति पाई। जिनशासन में प्रभावक आचार्य की उपाधि पाए थे।

प्रभुलाल के. संघवी

महापुरुषो पोतानी ह्यातीमां पोतानामां रहेली शक्तिनो शासन भाटे उपयोग करी शासन कार्योंनी रोशनी वधारे छे. प.पू. आचार्यश्री जिनचन्द्रसागरजी महाराज साहेब ने जीवन पर्यन्त शासन की सेवा करी... अयोध्यापुरम् तीर्थने विश्व प्रख्यात बनाव्युं. तेओश्रीमां रहेला ज्ञान, ध्यान-आराधनाथी जिनशासनमां ख्याति पायी. जिनशासनमां प्रभावक आचार्यनुं बिइए पाव्या हता.



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય



શ્રી જિનચન્દ્રસાગર
સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

ડૉ. વસંતભાઈ શાહ

આચાર્યશ્રી બંધુ બેલડી કી જોડી બેજોડ થી,
જો અચાનક બિચર ગઈ । પૂજ્યશ્રી ને બહુત
હી સહજતા સે સંયમ જીવન જિયા ઔર
ઉત્કૃષ્ટ ઉદાહરણ છોડ ગા । ઉન્હોંને બહુત હી
સરલતા સે તનાવમુક્ત રહકર કઈ બડી
જવાબદારિયાં નિભાઈ, જો આજ જૈન સમાજ
કે લિા પ્રેરક હૈ ।

ડૉ. વસંતભાઈ શાહ

ખૂબ જ સહજતાથી ઘણી મોટી જવાબદારીઓ
તણાવમુક્ત રહીને એવું જીવન સહજતાથી જીવ્યા
અને ઉત્કૃષ્ટ ઉદાહરણ મૂકતા ગયા. શુદ્ધ સો ટચના
સોના જેવા હેમજી અને જિનેશ્વર ભગવાનની સમીપ
એવા જિનજી બંનેનો સરવાળો એટલે બેલડી અંતે
આ બેલડી અણધારી અચાનક, કોઈપણ સંકેત
વગર એકદમ ખંડીત થઈ જશે એવું તો કોઈનેય
કલ્પનામાં ન આવે. આમાં વિધિનો આમાં પણ કંઈ
સંકેત હશે.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य



श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

चाणस्मा जैन महासंघ

पूज्य आ.म. श्री जिनचन्द्रसागरसूरिजी बहुत ही दक्ष और दीर्घदृष्टा थे। सतत् जिनशासन का हित उनके हृदय में बसता था। वो श्रमण-समुदाय-जंगम तीर्थ के घड़वैया थे। अयोध्यापुरम् आदि स्थावर तीर्थों के मार्गदर्शक रखवैया थे। श्री चाणस्मा संघ पर भी उनकी वात्सल्यमय अमीदृष्टि रही है। सं. 2024-32 के वर्ष में चातुर्मास, तारक गुरुदेव पं. अभयसागरजी म. केहस्तक यहीं गणिपद पाया शेषकाल में पदार्पण आदि स्मृति अविस्मरणीय बनी है।

डॉ. वसंतभाई शाह

पूज्य आ.म.ग. श्री जिनचन्द्रसागरसूरिजी घण्टा ज दक्ष अने दीर्घदृष्टा हता. सतत जिनशासननुं हित तेओनां हैयाभां वसतु हतुं. श्रमण समुदाय-जंगम तीर्थना तेओ घड़वैया हता. अयोध्यापुरम् वि. स्थावर तीर्थना तेओश्री मार्गदर्शक रखवैया हता. श्री चाणस्मा संघ उपर पण तेओश्रीनी वात्सल्यमय अमी दृष्टि रही छे. सं. 2024/32नी सालभां चातुर्मास तारक गुरुदेव श्री पं. अभयसागरजी म.श्री हस्तक अहीं ज गणिपद, शेषकालभां पदार्पण वि. तेओनी स्मृति अविस्मरणीय बनी रही छे.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य



श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

लोकीन (चाणस्मा)

पहाड़ जैसी आवाज और
विराट व्यक्तित्व के धनी बंधु
बेलडी म.सा. की प्रभु भक्ति
अविस्मरणीय है ।

લોકીન (ચાણસ્મા)

પહાડ જેવો અવાજ અને
વિરાટ વ્યક્તિત્વ ધરાવતા
બંધુ બેલડી મ.સા. ની પ્રભુ
ભક્તિ અવિસ્મરણીય છે.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

श्री सागर जैन उपाश्रय, पाटण
संघ को आचार्यश्री को खोने की
कमी खलेगी । एक निजी कहें
जाएँ, ऐसे गुरुदेव का वियोग,
आपश्री के समुदाय को और
हमारे संघ को खोट पड़ी है ।

श्री सागर जैन उपाश्रय, पाटण
संघने आचार्यश्री की गुमाव्यानी
भोट सारसे, अेक अंकगत
कहेवाय तेवा गुरुदेवनो वियोग,
आपश्रीना समुदायने तेमज
अभारा संघने भोट पडी छे.



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

“ શ્રી રાણપુર શ્વે.મૂ.પૂ. જૈન સંઘ

શ્રી અયોધ્યાપુરમ્ તીર્થ પ્રણેતા
પ્રતિષ્ઠાચાર્ય પ.પૂ. આચાર્યશ્રી
જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા. કે
સમાધિપૂર્વક કાલધર્મ કે સમાચાર જાનકર
શ્રી રાણપુર સંઘ દુઃખ કા અનુભવ કરતા હૈ ।
પૂજ્યશ્રી શાસન કે જ્યોતિર્ધર થે । પૂજ્ય શ્રી
અપુર્વ કોટિ કી સંયમ આરાધના કર અનેક
આત્માઓં કે તારક બને હૈ ।

“ શ્રી સાગર જૈન ઉપાશ્રય, પાટણ

શ્રી અયોધ્યાપુરમ્ તીર્થ પ્રણેતા
પ્રતિષ્ઠાચાર્ય પ.પૂ. આચાર્યશ્રી જિનચન્દ્રસાગર
સૂરીશ્વરજી મ.સા. ના સમાધિપૂર્વક
કાળધર્મના સમાચાર જાણી શ્રી રાણપુર
સંઘ દુઃખની લાગણી અનુભવે છે. પૂજ્ય શ્રી
જિનશાસનના જ્યોતિર્ધર હતા. પૂજ્ય શ્રી
અપૂર્વ કોટીની સંયમ આરાધના કરી અનેક
આત્માઓના તારક બન્યા છે.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

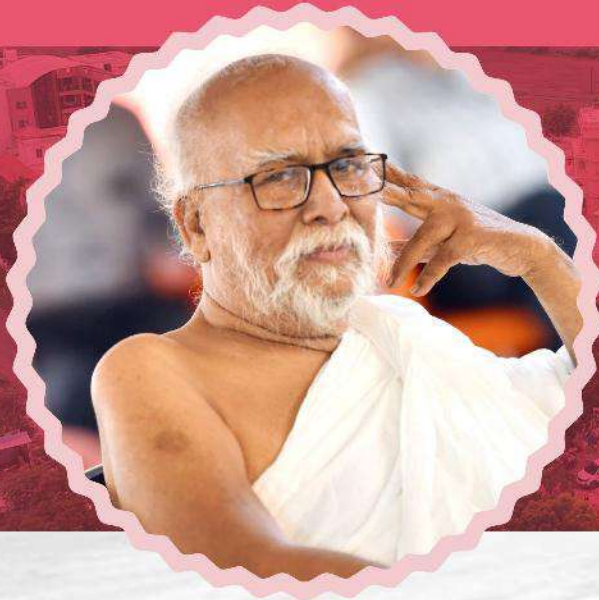
शब्दांजलि

“ रहीम भाई बगदाणावाला

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. के विषय में शब्द कम पड़े। पूज्य आचार्यश्री का जीवन मेरे लिए आध्यात्मिक और अहिंसा की परंपराओं में मूल और कालातीत सिद्धांतों द्वारा संचालित, करुणा, अहिंसा और नैतिक आचरण के महत्व की ओर का मार्ग प्रदान किया है, उनके हृदय में चौबीसवें तीर्थंकर प्रभु महावीर के उपदेशों के लिए गहरा आदर रहा है।

“ रहिमभाद्य भगदाणावाणा

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. विषे शब्दो कदाय टूका पडे. श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. नुं ज़ुपन मारा माटे आध्यात्मिक अने अहिंसानी परंपराओमां भूण अने कालातीत सिद्धांतो द्वारा संघालित, कइए, अहिंसा अने नैतिक आचरणना महत्व तरङ्गनो मार्ग प्रदान कथो छे, तेभना हृदयमां योपीसमा तीर्थंकर भगवान महावीरना उपदेशो माटे ओडो आदर रहेलो छे.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

“संदीपभाई की वंदना श्री अरिहंत मित्र मण्डल

आपके गुरुबंधु की अचानक बिदाई आपके लिए, आपके समुदाय के लिए, हमारे जैसे सभी भक्तों के लिए कभी पूरी नहीं की जा सके, ऐसी बड़ी कमी है। इस दुःखद समय में श्री अरिहंत मित्र मंडल, मुंबई आप सबसे सहानुभूति प्रकट कर पूज्य गुरुदेव के चरण में श्रद्धा-सुमन अर्पण करता है। आपश्री बंधु बेलडी गुरुदेव के पावन सान्निध्य में श्री अरिहंत मित्र मण्डल द्वारा श्री सिद्धाचल महातीर्थ की छत्रछाया में संपन्न 'श्री उपधान आराधना' एक सुवर्णमय इतिहास के आलेखन स्वरूप है, उसके बदले श्री अरिहंत मित्र मण्डल आपका ऋणी रहेगा।

“संदीपभाईना वंदना श्री अरिहंत मित्र मंडल

आपना वडील गुरुभांधवनी अलाधारी विधाय आपना माटे, आपना समुदाय माटे, अमारा जेवो सर्वे भक्तो माटे न पूरी शकाय तेवी मोटी जोट छे. आ दुःखद समये श्री अरिहंत मित्र मंडल, मुंबई आपसौ समक्ष सद्गानुभूति प्रगट करी पूज्य गुरुदेवना यरछे श्रद्धासुमन अर्पण करे छे. आपश्री भंधु जेलडी गुरुदेवना पावन सानिध्य मां श्री अरिहंत मित्र मंडल द्वारा श्री सिद्धाचल महातीर्थनी छत्रछायामां संपन्न थयेल “श्री उपधान आराधना” अेक सुवर्णमय इतिहासना आलेखन स्वरूप छे, ते जदल श्री अरिहंत मित्र मंडल हमेशा आपनुं ऋणी रहेछे.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

“ डी.बी. वोरा

हाल न्यूयार्क, पूर्व अति.कले.भावनगर

पूज्य आचार्यश्री के वियोग की
व्यथा को शब्दों में व्यक्त करना
अशक्य ही है। वे सिर्फ बड़े नहीं
दिव्य विभूति थे। समस्त
भक्तवृन्द एवं शिष्यों पर मातृवत्
वात्सल्य बरसाते रहते थे।

“ डी.जी. पोरा

हाल न्यूयार्क, पूर्व अधिक कलेक्टर भावनगर

पूज्य आचार्यश्री ना वियोगनी
व्यथा ने शब्दों में वर्णवणी
अशक्य ज छे तेओ मात्र पडील
नहीं दिव्य विभूति हतां अने सर्वे
भक्तवृंद तथा शिष्यो पर मातृवत्
वात्सल्य वरसावतां रह्यां हतां.



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

पूज्य आचार्यश्री का सानिध्य और उनकी कृपादृष्टि मेरे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण समय अविस्मरणीय संस्मरणयुक्त रहा है। पूज्य गुरुवर्य की कृपादृष्टि जीवन का साउत्साह और आनंद बनी है। आज भी आँखें बंद करने पर उनक साक्षात् दर्शन की सम्यक् अनुभूति होती है।

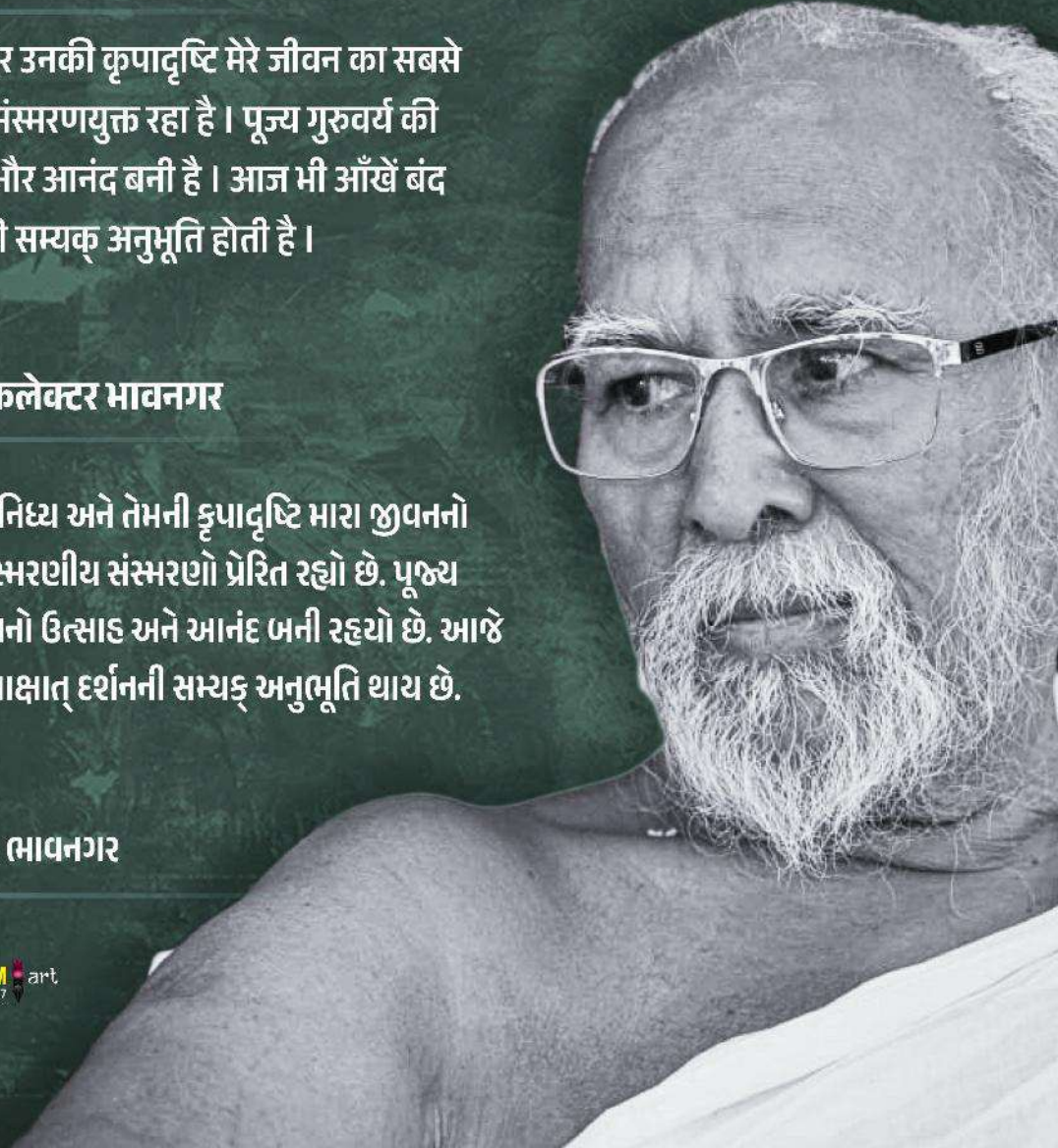
धीरेन बी. वोरा

हाल न्युयार्क, पूर्व अतिरिक्त कलेक्टर भावनगर

पूज्य आचार्यश्री सायेनुं मारुं सानिध्य अने तेमनी कृपादृष्टि मारा ज़ुपननो सौथी महत्तनो समयगाणो-अविस्मरणीय संस्मरणो प्रेरित रह्यो छे. पूज्य गुरुवर्यनी कृपादृष्टि अमारा ज़ुपननो उत्साह अने आनंद ज़नी रह्यो छे. आज्ञे पछा नयन ने जंध राजीने तेमना साक्षात् दर्शननी सम्यक् अनुभूति थाय छे.

धीरेन जी. पोरा

हाल न्युयार्क, पूर्व अधिक कलेक्टर, भावनगर



9424898657

AYODHYAPURAM art
9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शासन में अपूरणीय क्षति हुई है। उनकी आत्मा महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी दादा की पर्षदा में स्थान पाए, ऐसी प्रभु को प्रार्थना। बंधु बेलडी नाम से समग्र जैन शासन में अनोखी पहचान और सम्मान प्राप्त करने वाले उनके अगणित गुणों को भी वंदना।

हसमुख वेदलिया की वंदना

शासनमा न पुरी शकाय तेवी भोट पडेल छे. स्वनो आत्मा महाविदेह क्षेत्रमां सीमंधर स्वामीदादानी पर्षदामां स्थान पाभे तेवी प्रभुने प्रार्थना. भंधु बेलडी नामथी समग्र जैन शासनमां आगवी ओणज अने सन्मान प्राप्त करनार तेओना अगणित गुणोने पछा वंदना.

हसमुख वेदलीयानी वंदना

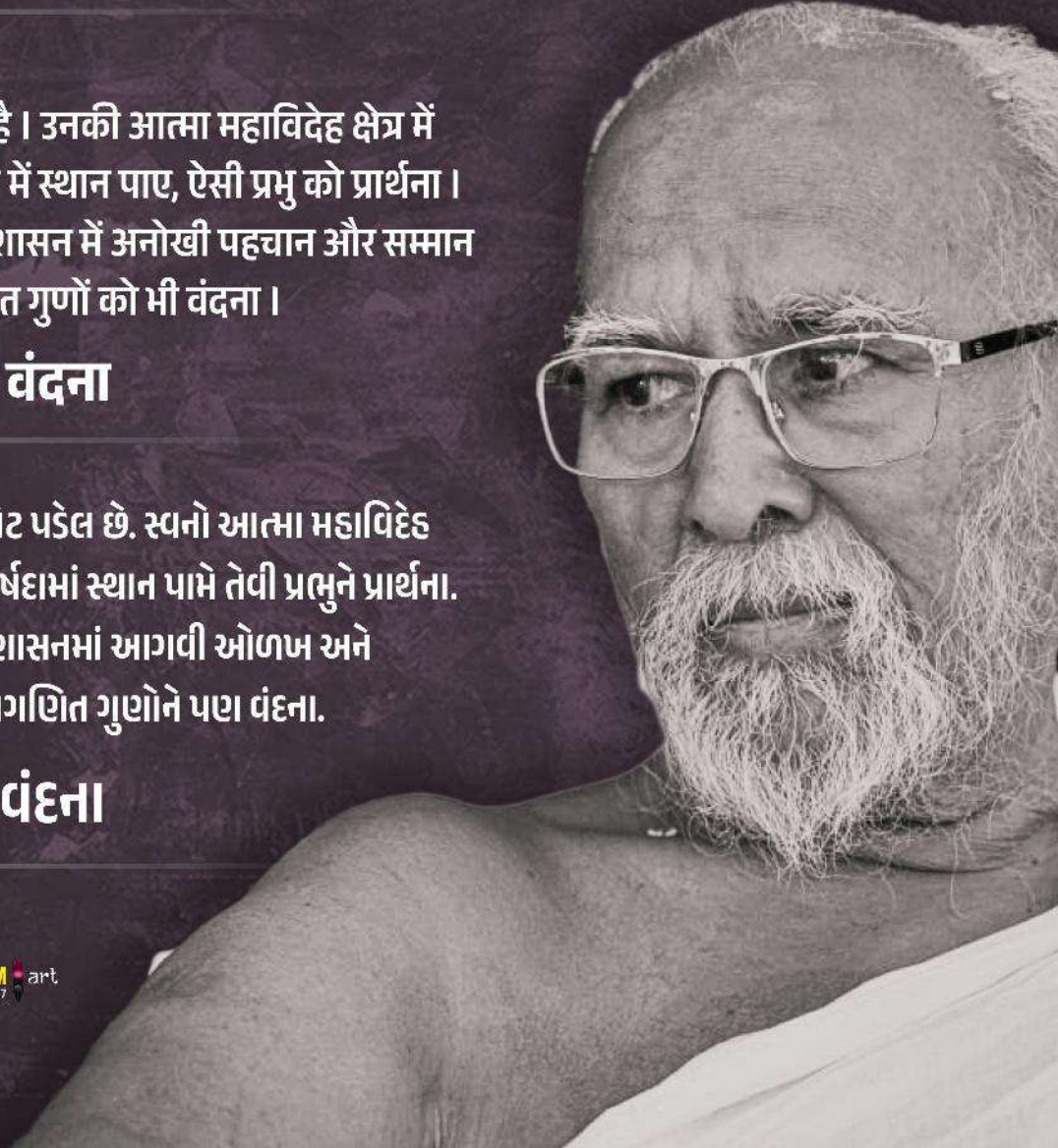
9424898657

AYODHYAPURAM art
9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com





અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

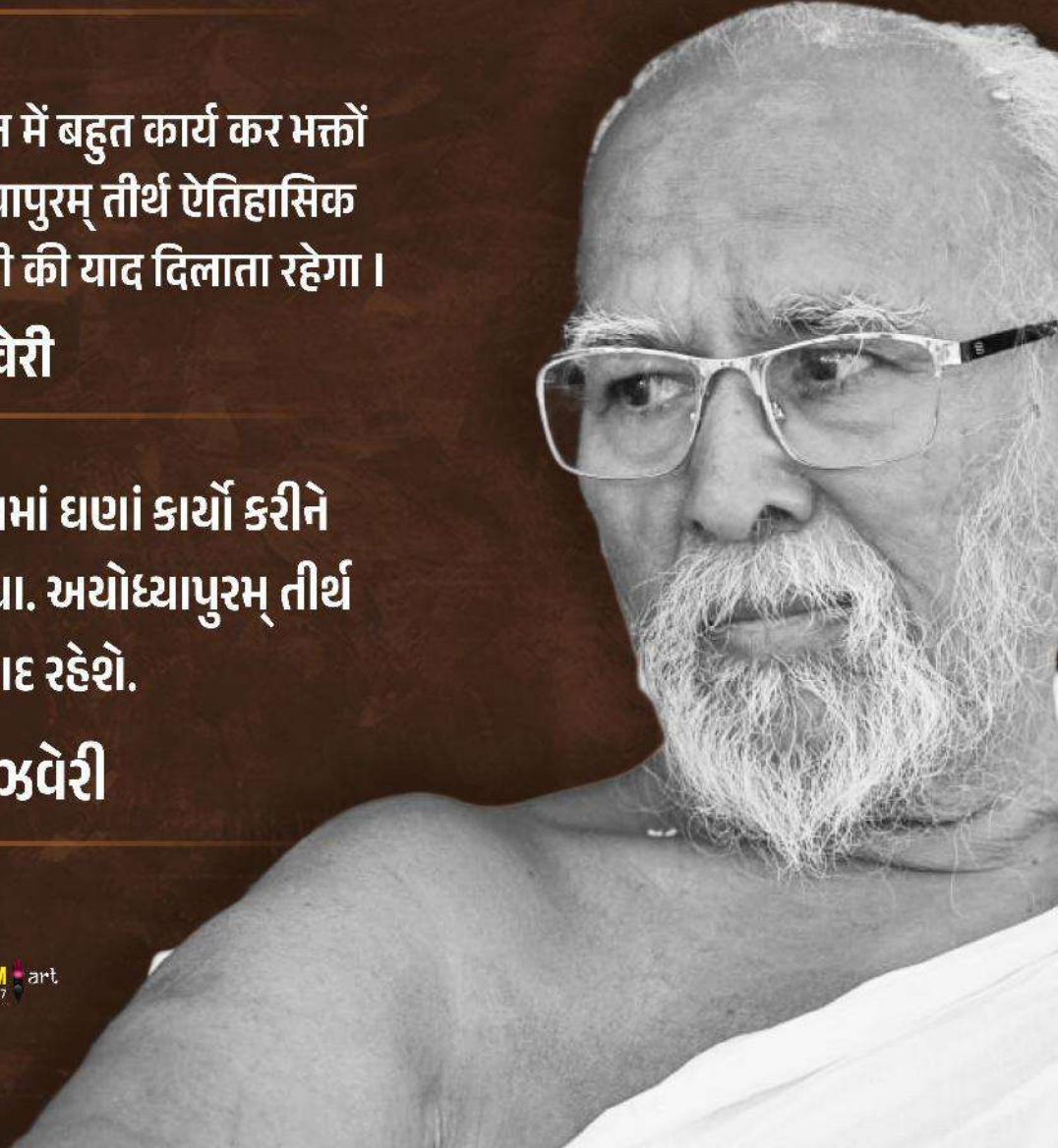
શબ્દાંજલિ

પૂજ્ય ગુરુદેવ ને જૈન શાસન મેં બહુત કાર્ય કર ભક્તોં
કો ધર્મ સે જોડા । અયોધ્યાપુરમ્ તીર્થ ઇતિહાસિક
ધરોહર હૈ, જો સદા પૂજ્યશ્રી કી યાદ દિલાતા રહેગા ।

સી.ઈ. મનુભાઈ ડી. ઝવેરી

પૂજ્ય ગુરુદેવે જૈન શાસનમાં ઘણાં કાર્યો કરીને
ભક્તોને ધર્મ સાથે જોડ્યા. અયોધ્યાપુરમ્ તીર્થ
એક ઐતિહાસિક તેની યાદ રહેશે.

સી.એ. મનુભાઈ ડી. ઝવેરી



9424898657

AYODHYAPURAM art
9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ



જબ-જબ उनसे मिली तब-तब उनके असीम वात्सल्य की अनुभूति मुझे हुई है। अपना ही आश्रित मानकर मेरी आराधना-साधना का ध्यान रखते तब आश्चर्य होता कि एक महापुरुष मेरे जैसी छोटी साध्वी का भी इतना ध्यान रखते हैं। मेरे जीवन में उनकी इस वात्सल्यभरी दृष्टि की कमी रहेगी।

सा. आत्महितरेखाजी की वंदनावली

જ્યારે-જ્યારે તેમને મળવાનું થતું ત્યારે તેઓના અસીમ વાત્સલ્યની અનુભૂતિ મેં કરી છે. પોતાના જ આશ્રિત માનીને મારી આરાધના-સાધનાનું ધ્યાન રાખતા. ત્યારે આશ્ચર્ય થતું કે એક મહાપુરુષ મારા જેવા નાની સાધ્વીનું પણ આટલું ધ્યાન રાખે. મારા જીવનમાં એમની આ વાત્સલ્યભરી દૃષ્ટિની ખોટ સર્જશે.

સા. આત્મહિતરેખાજી ની વંદનાવલી

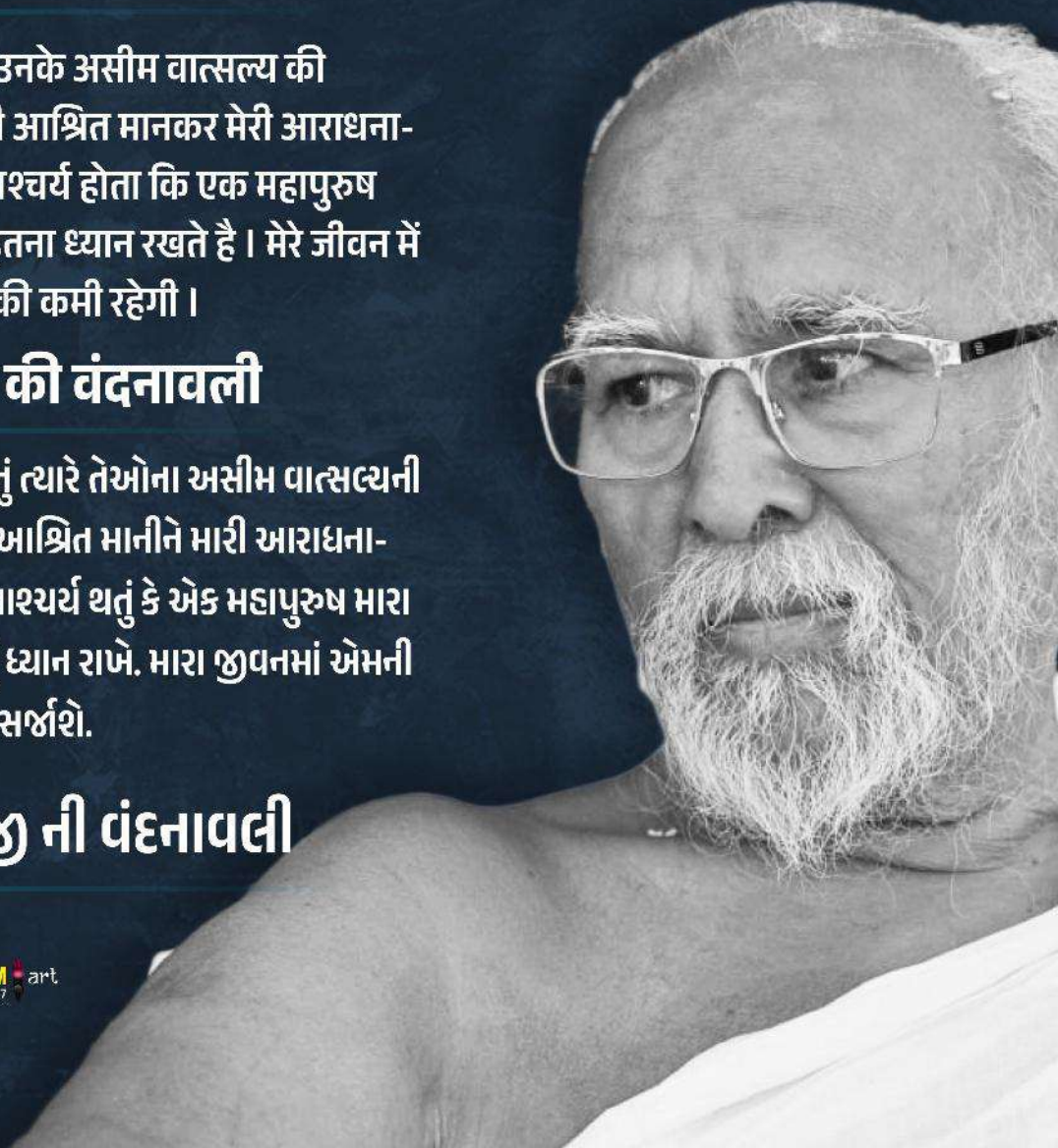
9424898657

AYODHYAPURAM art
9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

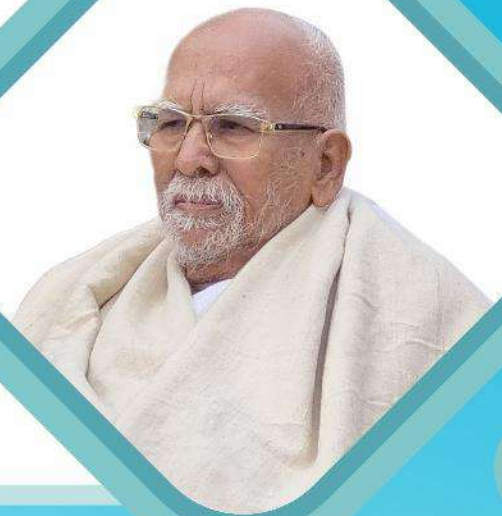
ayodhyapuramtirth@gmail.com



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



संयम में कहीं भी क्षति
दिखाई देती तो लाल आँख कर
टकोर करते । कभी कोई तकलीफ
आई हो तो वात्सल्य से हमारे
समाचार भी लेते ।

देवयशाश्रीजी की वंदना

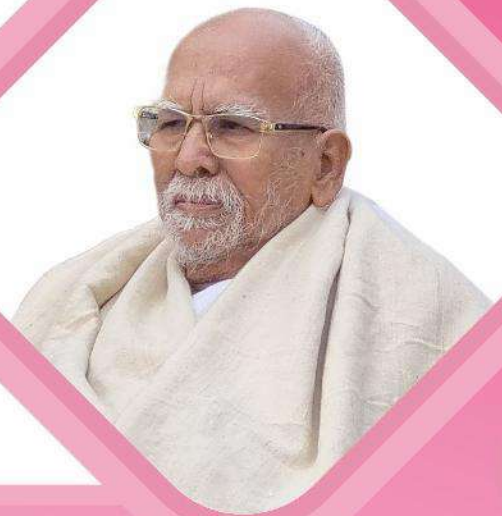
संयममां क्यांय क्षति
देखाय तो लाल आंख करी टकोर
करता होता. क्यारेक कंछक तकलीफ
आपी होय तो वात्सल्यथी
समाचार पण अमारा लेता.

देवयशाश्रीजुनी वंदना

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



सूरज इस धरती को
रोशन करने उगे इससे पहले ही
जिनशासन को जिसने बरसों तक
रोशन किया, ऐसे एक महासूर्य के
अस्त होने के समाचार सुनते ही सब
हिल गए, आँखें भर आईं ।

सा. भव्यप्रज्ञाश्रीजी
की वंदनावली

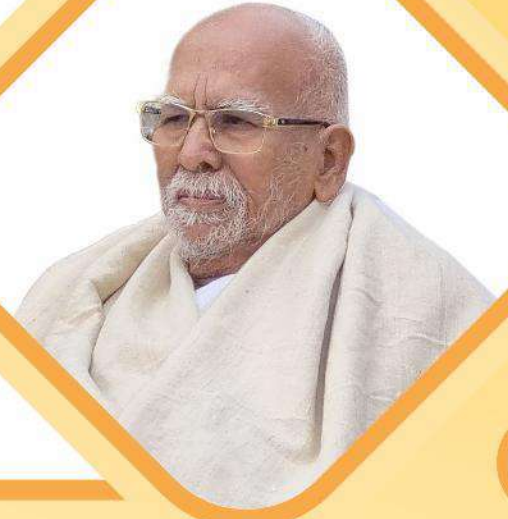
सूरज आ धरतीने
अजपाणवा उगे ते पहेलां ज
जिनशासनने जेणे वर्षो सुधी
अजपाण्युं अेवा अेक महासूरज अस्त
थयाना सभायार सांभणतां ज अधा
हयभयी गया. आंजो उभराय गय

सा. भव्यप्रज्ञाश्रीजुनी
पंदनावली

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



धर्म आराधना तो महत्वपूर्ण
है ही, उससे भी मृत्यु में समाधि अधिक
महत्वपूर्ण है। महान पुण्यशाली आत्मा,
जिन्होंने अंत समय में भी सेवा नहीं ली।
सहज भाव से इस संसार से विदा ले ली।
पूज्यश्री अनेक गुणों के स्वामी थे।

सा. निरुपमाश्री आदि
की वंदना

धर्म आराधना तो महत्वपूर्ण है
पण अना करतां प मृत्युमां समाधि पधु
अगत्यनी छे. महान पुण्यशाली आत्मा जेभने
अंत समये पण सेवा न लीधी सहज भावे आ
संसारमांथी विदाय लीधी. अनेक गुणोना स्वामी छता.
अयोध्यापुरमनो धनकार... सहसिष्यना
जुवननो रणकार... हवे थछ गयो त्यां शूनकार...

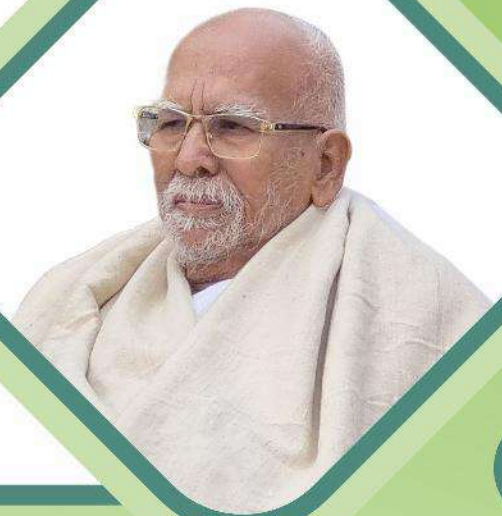
सा. निरुपमाश्री आदि
नी वंदना

AYODHYAPURAM art
9424898657

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



वात्सल्य की बदली
और प्रेम की मधुरता बिखेरता
मुखमंडल और निर्दोष लगावभरा
वाणी का संचार अब दुर्लभ नहीं
अलभ्य बन गया ।

सा. धर्मज्योतिश्रीजी (मामी म.सा.)
आदि की वंदना

वात्सल्यनी वादणी
अने प्रेमनी मधुरता वेस्तुं
अे मुખमंडल अने निर्दोष
लागणीभर्यो वाणीनो संचार हवे
दुर्लभ ज नही अलभ्य जनी गयो.ा

सा. धर्मज्योतिश्रीजी (मामी म.सा.)
आदिनी वंदना

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य



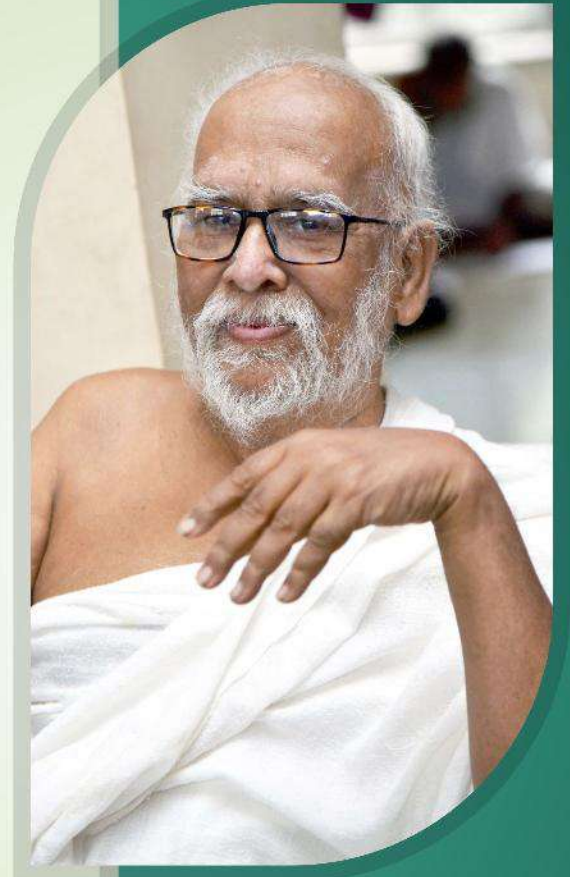
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. शब्दांजलि

सचमुच हमने एक शासन-रत्न खो दिया है,
ऐसा लग रहा है । खुमारी से कार्य संपन्न
करने वाले गुरु भगवंत की जैनशासन और
समुदाय को बहुत बड़ी खोट पड़ी है ।

सा. स्वयंप्रभाश्रीजी म.

साथे જ આપણે એક શાસન રત્નને ગુમાવી
દીધુ એવુ લાગી રહ્યું છે, ખુમારીથી કાર્ય સંપન્ન
કરવાવાળા એવા ગુરુભગ. ની જૈનશાસન
અને સમુદાયને ઘણી મોટી ખોટ પડી ગઇ.

સા. સ્વયંપ્રભાશ્રીજી મ.



9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય



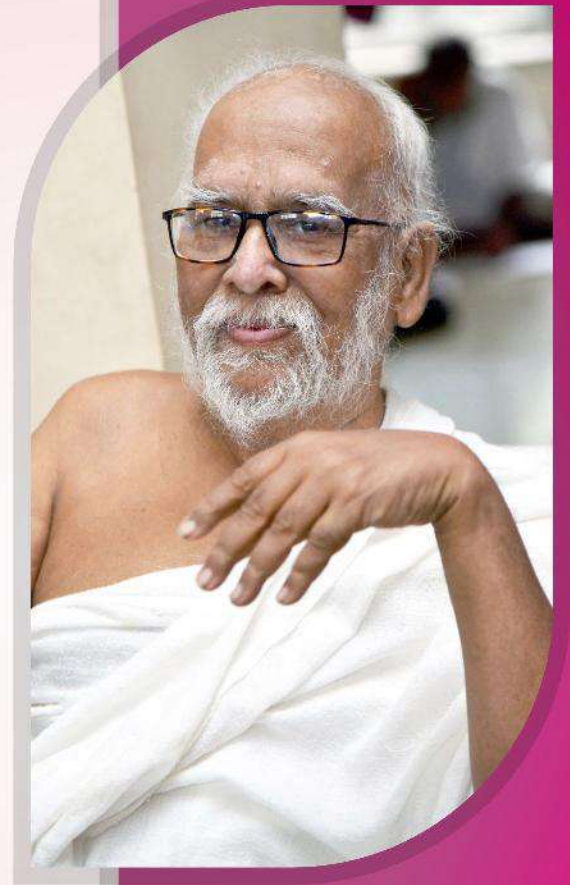
શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા. શબ્દાંજલિ

પૂજ્યશ્રી કી પ્રભુ ભક્તિ, જ્ઞાન સાધના, સમુદાય
ઔર શિષ્યોં-પ્રશિષ્યોં કે જીવન નિર્માણ અદ્ભુત
યોગદાન થા। બાહર સે મુદ્રા ભલે કડક પર ભીતર
મેં અત્યન્ત કોમલ-પ્રેમલ થે, જૈસે શ્રી ફલ ।

સા. નયપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. પ્રશમરત્નાશ્રીજી
સા. દિવ્યપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. પ્રજ્ઞરત્નાશ્રીજી

પૂજ્યશ્રીની પ્રભુભક્તિ, જ્ઞાન સાધના, સમુદાય એવં
શિષ્યો-પ્રશિષ્યોના જીવન ઘડતરમાં
અદ્ભુતયોગદાન હતું. બહારથી મુદ્રા ભલે કડક પણ
ભીતરમાં અત્યંત કોમળ-પ્રેમાળ હતાં, જેમ શ્રીફલ...

સા. નયપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. પ્રશમરત્નાશ્રીજી
સા. દિવ્યપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. પ્રજ્ઞરત્નાશ્રીજી



9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

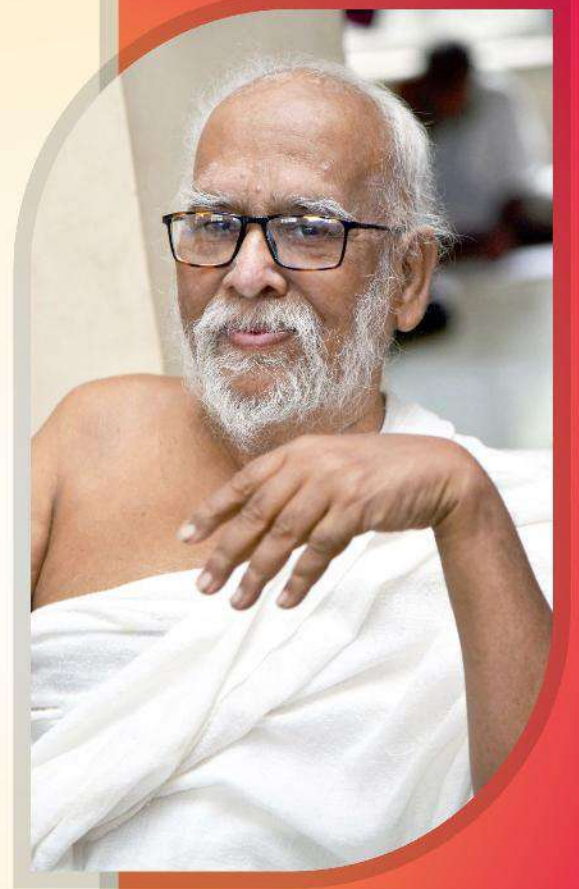
શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા. શબ્દાંજલિ

હમને અપને જીવનદાતા યો દિએ હૈ । ડનકે ગુણોં કો, ડનકે
જીવન કો, ડનકે આચાર-પાલન કો, ડનકી સમય સૂચકતા
કો, ડનકી વિચારધારા કો પહુંચ સકે, ડનકી તુલના મેં આ
સકે, ઈસા કહાં મિલેગા ? સબકે લિએ કિતની ચિંતા થી ।
અબ મી વહી અપના સબકા ધ્યાન રખેંગે, ડર્શન મી ડેંગે હી ।

સા. નયપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. મોક્ષરત્નાશ્રીજી કી વંદના

આપણે આપણા જીવનદાતાને ગુમાવ્યા છે. ઁમના ગુણોને
ઁમના જીવનને ઁમના આચાર પાલન ને ઁમની સમય
સૂચકતા તથા વિચારધારાઓ ને પહોંચી શકે તેવું તેમની તોલે
આવે ઁવું હવે ક્યાં મળે ? બધા માટે કેટલી ચિંતા હતી, હજી
પણ ઁ જ આપણું ધ્યાન રાખશે આપને ડર્શન પણ દેશે જ.

સા. નયપ્રજ્ઞાશ્રીજી, સા. મોક્ષરત્નાશ્રીજીની વંદના



9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

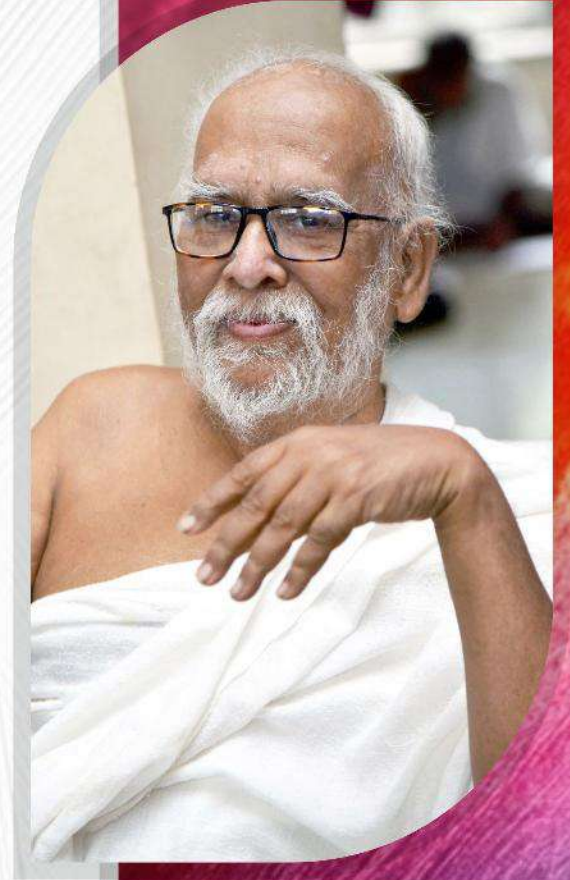
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा. शब्दांजलि

अब इस अंधेरे में कैसे भटक जाएंगे । कौन हमें
मार्ग दिखाएगा ? कौन हमें सूचना करेगा ? अपने
को तो कभी नहीं भरी जा सके, ऐसी बड़ी खाई
नजर के सामने आ खड़ी है, पर समुदाय और
शासन को भी सहन करने की बारी आई है ।

सा. सिद्धरत्नाश्रीजी की वंदना

हवे आ अंधारामां केवा अटवाए जइशुं. कोए आपएने
भारग देखाडशे ? कोए आपएने सूयन करशे ?
आपएने तो कहीय न पूरी शकाय तेवी मोटी जाए नजर
सत्मी आवी पडी छे. पए समुदायने अने शासनने पए
आ सहन करवानो वजत आव्यो. आम अयानक अहीं
अंधार पथराए गयो. उजस कोए देखाडशे ?

सा. सिद्धरत्नाश्रीजीनी वंदना



9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth@gmail.com

ayodhyapuramtirth



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य



श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

पू.आ. श्री जिनचन्द्रसागर
सूरीश्वरजी म. की
अचानक अंतिम विदाई
से हम सबको बहुत दुःख
हुआ है। परमात्मा उनकी
आत्मा को शांति दे।

विद्या शिशु गुणोदया
श्री शीलव्रताश्री
आदि की वंदना

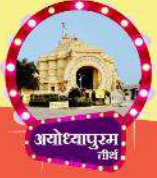
पू.आ. श्री जिनचन्द्रसागर
सू.म. नी अचानक अंतिम
विदायथी अभो सौने
भूज दुःख थयुं छे.
परमात्मा अमेना
आत्माने शांति आपे.

विद्या शिशु गुणोदयाश्री
शीलव्रताश्री
आदिनी वंदना

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

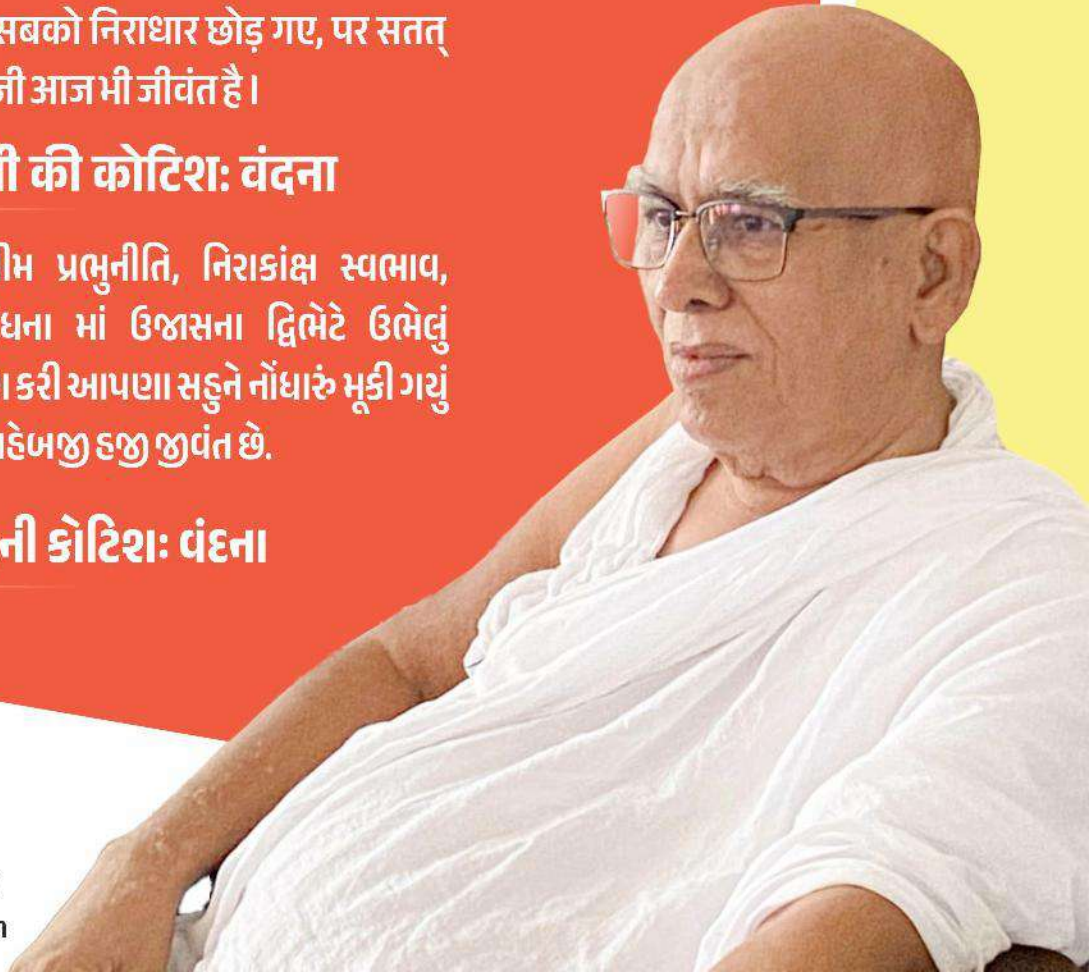


आजीवन गुरुनिष्ठा, असीम प्रभुनीति, निराकांक्ष स्वभाव, वाणी में मिठास और साधना में उजास के संगम पर खड़ा व्यक्तित्व परम के पंथ पर प्रयाण कर हम सबको निराधार छोड़ गए, पर सतत ऐसा ही लगता है कि साहेबजी आज भी जीवंत है।

सा. दिव्य दर्शनाश्रीजी की कोटिश: वंदना

आજીવન ગુરુનિષ્ઠા, અસીમ પ્રભુનીતિ, નિરાકાંક્ષ સ્વભાવ, વાણીમાં મીઠાશ અને સાધના માં ઉજાસના દ્વિભેદે ઉભેલું વ્યક્તિત્વ પરમના પંથે પ્રયાણ કરી આપણા સહુને નોંધારું મૂકી ગયું છતાં. સતત એવું જ લાગે કે સાહેબજી હજી જીવંત છે.

सा. दिव्यदर्शनाश्रीजी की कोटिश: वंदना



AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

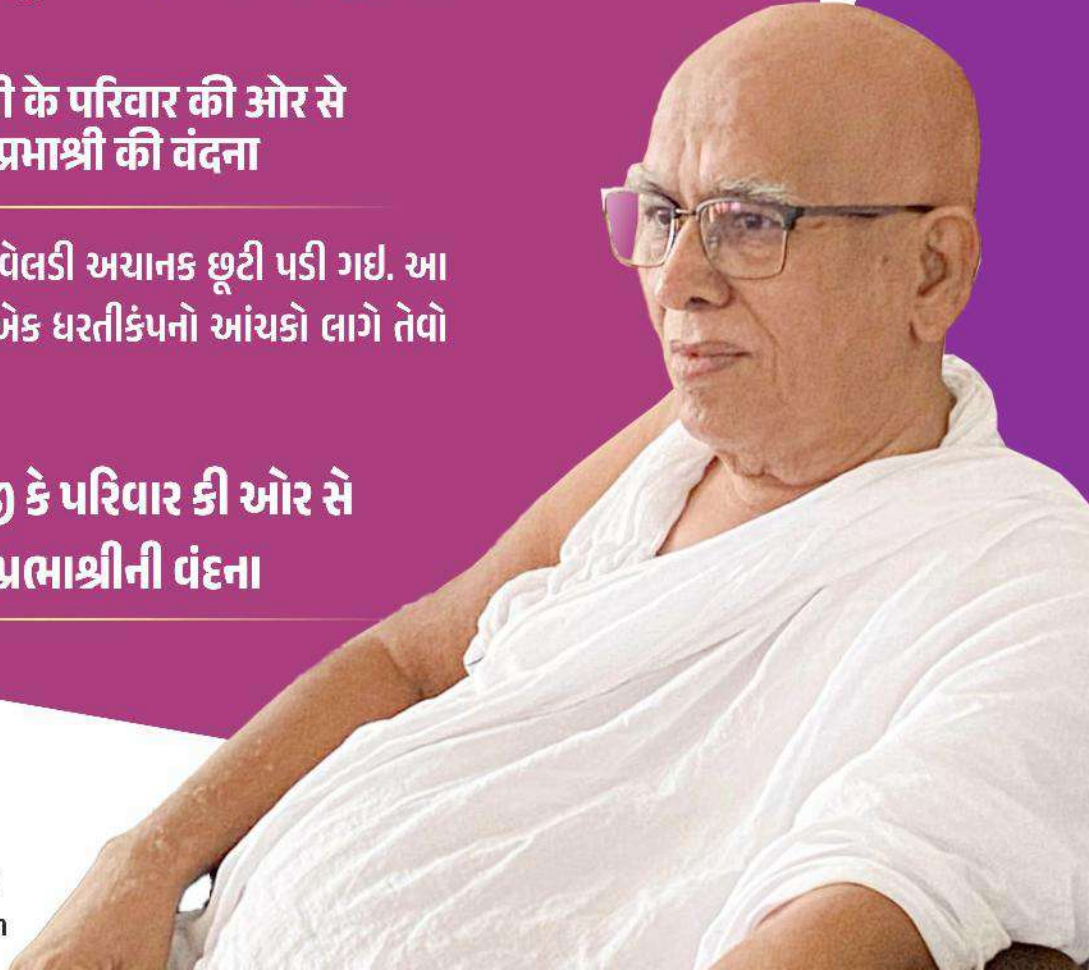


बेलडी की बेल में से एक बेल अचानक जुदा हो गई। वायु वेग से फैलते इस समाचार से भूकंप का झटका लगा हो, ऐसा अनुभव हुआ।

सा. ओंकारश्रीजी के परिवार की ओर से
सा. जयंतप्रभाश्री की वंदना

બેલડીની બેલડીમાંથી એક બેલડી અચાનક છૂટી પડી ગઈ. આ સમાચાર વાયુવેગે ફેલાતાં એક ધરતીકંપનો આંચકો લાગે તેવો અનુભવ થયો.

सा. ओंकारश्रीजी के परिवार की ओर से
सा. जयंतप्रभाश्रीની વંદના



AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरेश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि



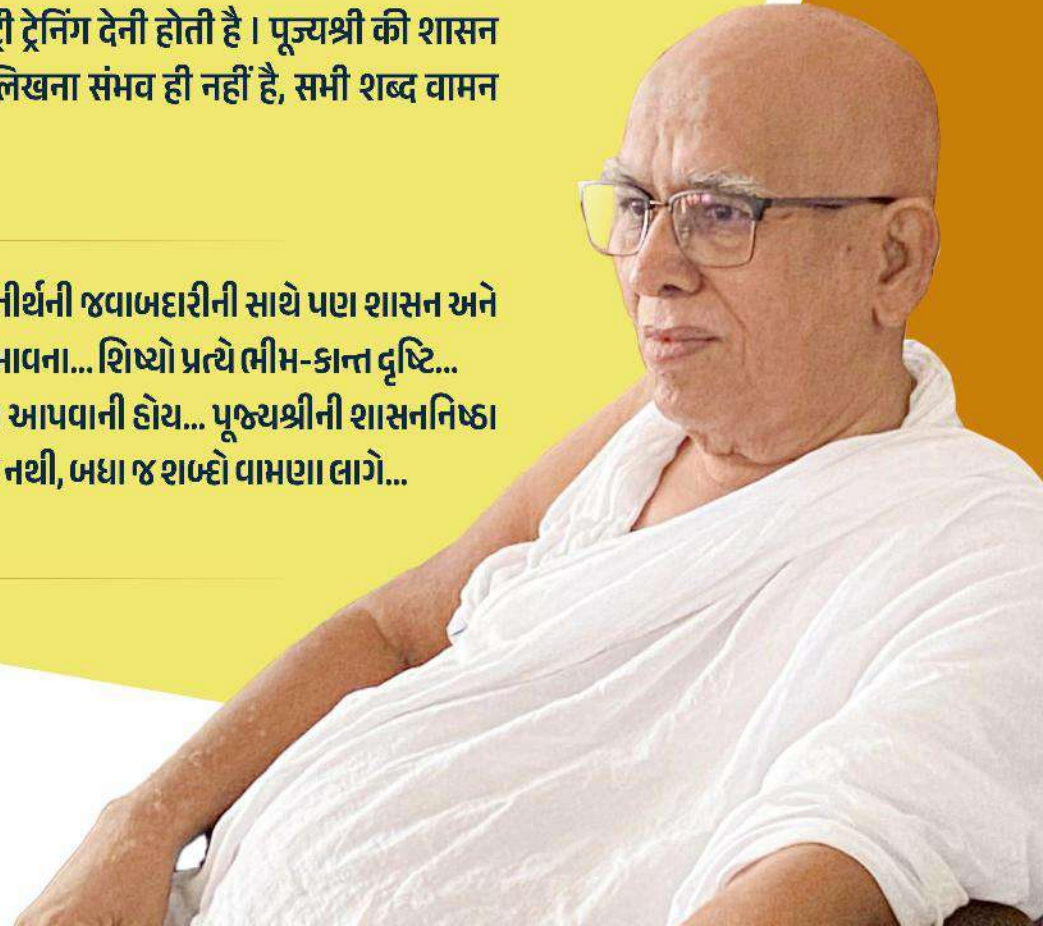
शासन प्रभावना के अनेक कार्य, तीर्थ की जवाबदारी के साथ शासन और समुदाय के लिए हमेशा कर गुजरने की भावना... शिष्यों के प्रति भीम-कांत दृष्टि...

शिष्यों को शासन के लिए मिलेट्री ट्रेनिंग देनी होती है। पूज्यश्री की शासन निष्ठा, समुदाय निष्ठा के लिए लिखना संभव ही नहीं है, सभी शब्द वामन लगते हैं।

- सा. यशस्विता श्री

अनेक शासन प्रभावना कार्य... तीर्थनी जवाबदारीनी साथे पछा शासन अने समुदाय माटे हमेशा करी छूटवानी भावना... शिष्यो प्रत्ये भीम-कांत दृष्टि... शिष्योने शासन माटे मिलेट्री ट्रेनिंग आपवानी होय... पूज्यश्रीनी शासननिष्ठा समुदायनिष्ठा माटे लभवुं. शक्य ज नथी, भधा ज शब्दो वामना लागे...

- सा. यशस्विता श्री



AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com

અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક, જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

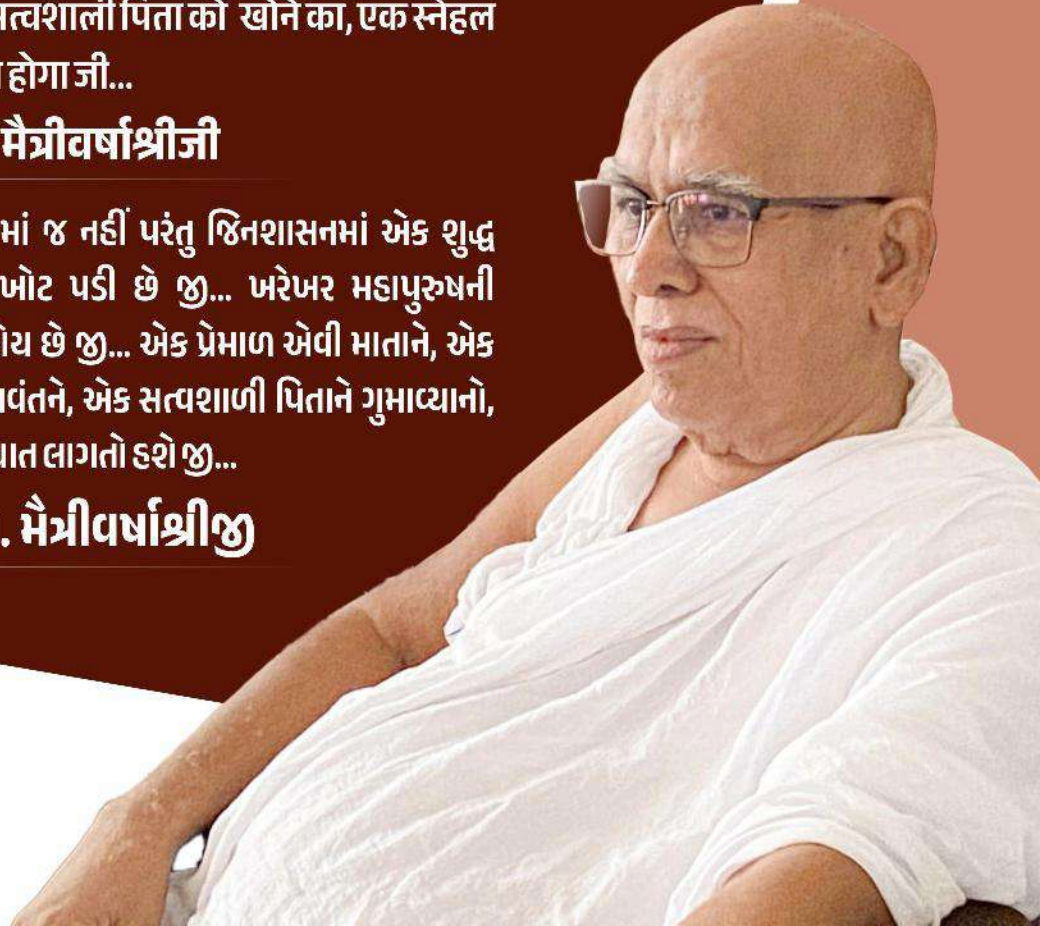


આચાર્યશ્રી કે વિયોગ સે સમુદાય મેં હી નહીં, પરંતુ જિનશાસન મેં એક શુદ્ધ પવિત્ર પુણ્યશાલી મહાપુરુષ કી કમી હુઈ હૈ । સચમુચ મહાપુરુષ કી ઉપસ્થિતિ માત્ર મી પ્રભાવશાલી હોતી હૈ । એક વાત્સલ્યમયી માતા કો, એક ભવોદધિતારક ગુરુદેવ કો એક સત્વશાલી પિતા કો ઓને કા, એક સ્નેહલ બંધુ કો ગુમાને કા આઘાત લગતા હોગા જી...

- સા. શીલવર્ષાશ્રીજી, સા. મૈત્રીવર્ષાશ્રીજી

એઓશ્રીજીના વિયોગથી સમુદાયમાં જ નહીં પરંતુ જિનશાસનમાં એક શુદ્ધ પવિત્ર પુણ્યશાળી મહાપુરુષની ખોટ પડી છે જી... ખરેખર મહાપુરુષની ઉપસ્થિતિ માત્ર પણ પ્રભાવવંતી હોય છે જી... એક પ્રેમાળ એવી માતાને, એક ભવોદધિતારક એવા એક ગુરુ ભગવંતને, એક સત્વશાળી પિતાને ગુમાવ્યાનો, એક સ્નેહાળ બંધુને ગુમાવ્યાનો આઘાત લાગતો હશે જી...

- સા. શીલવર્ષાશ્રીજી, સા. મૈત્રીવર્ષાશ્રીજી



AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com

अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक, जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

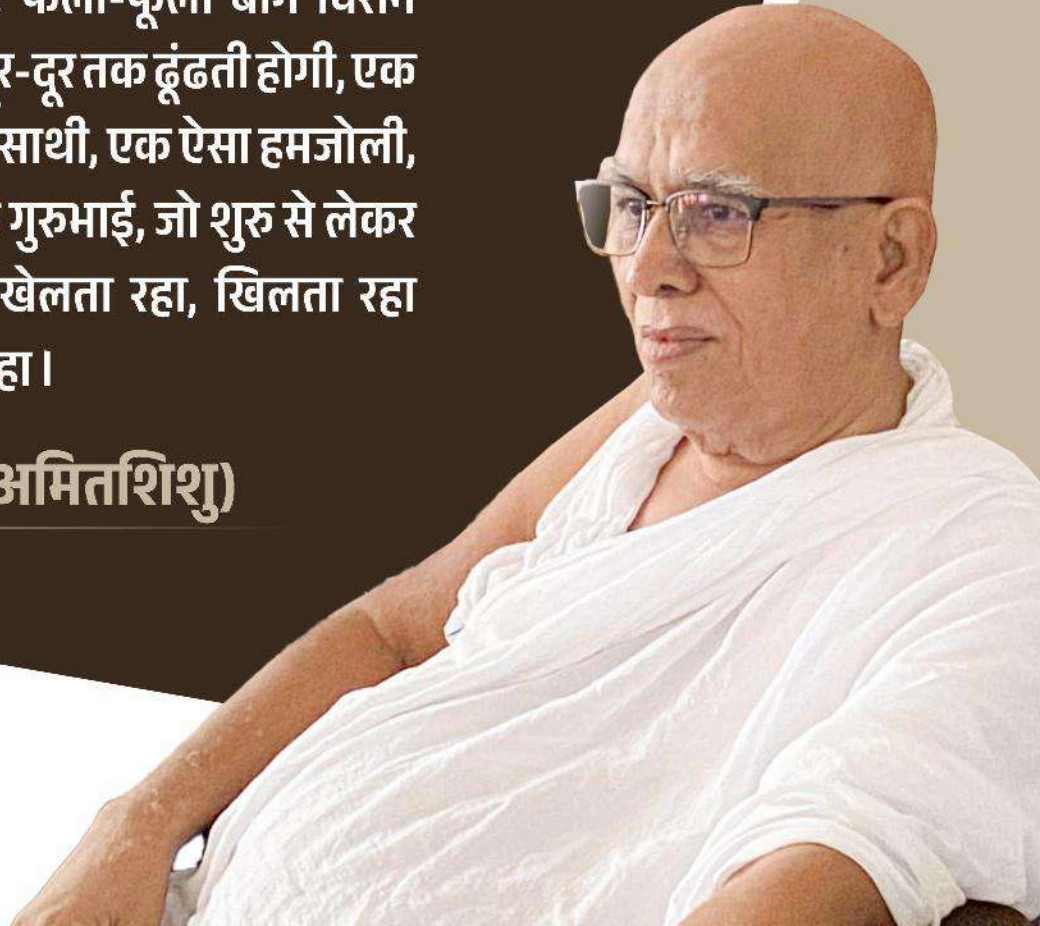
श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.



शब्दांजलि

शब्द निशब्द बन गये, विचार अहसास बनकर
कसोट रहे हैं, हरा-भराए फला-फूला बाग विरान
नजर आने लगा। आँखें दूर-दूर तक ढूँढती होगी, एक
ऐसा हमसफर, एक ऐसा साथी, एक ऐसा हमजोली,
एक दोस्त, एक बंधु, एक गुरुभाई, जो शुरु से लेकर
जीवन के 70 वर्ष तक खेलता रहा, खिलता रहा
संभलता रहा, संभालता रहा।

- सा. अमीपूर्णाश्री (अमितशिशु)



AYODHYAPURAM art
9424898657

9424898657

www.bandhubeldi.com

ayodhyapuramtirth

ayodhyapuramtirth@gmail.com



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

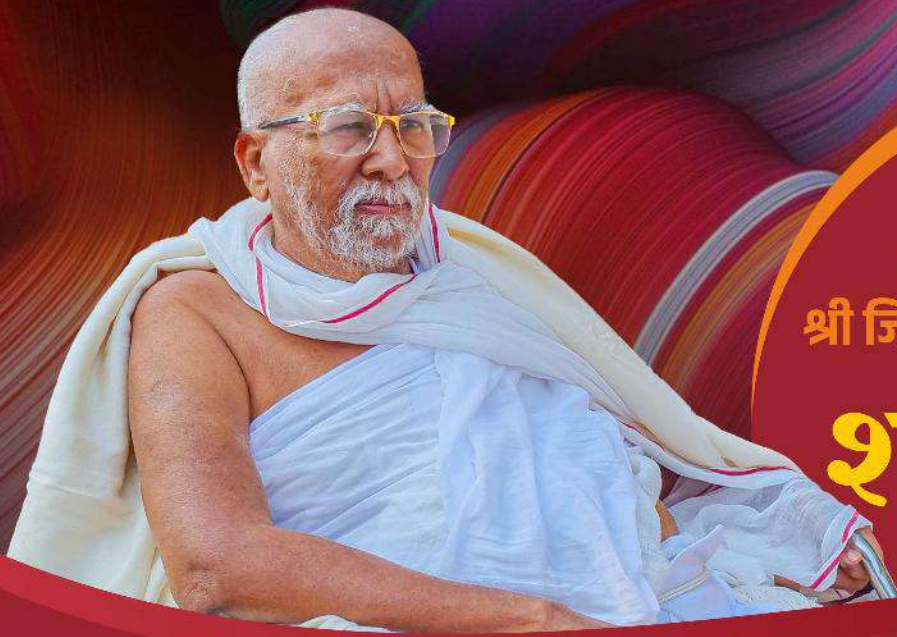
શબ્દાંજલિ

અનપેક્ષિત આફત કી આંધી, જિસસે કુદરત કી
આફત કે કારણ શાસન કા જગમગાતા સૂર્ય
સાગર કિનારે હી સાગર કી વિશાલતા મેં સમા
ગયા । ગુરુદેવ કી પ્રસન્ન મુદ્રા ! કૈસી સમતા !
કૈસા હસમુખ ચેહરા ! અબ કહાઉં દેખના મિલેગા ?
ક્યા લિખના । કલમ ઓર દિમાગ કામ નહીં
કરતે । સંઘ કો એક આરાધક પ્રશાંત પુરાની
પીઢી કે એક પ્રૌઢ પથદર્શક કી કમી હુઈ હૈ ।

- સા. શ્રી રમ્યપ્રજ્ઞાશ્રીજી -

આણધારી આફતની આંધી... જેથી કુદરતની
આદતના કારણે શાસનનો ઝબડાળતો સૂર્ય સાગર
કિનારે જ સાગરની વિશાળતામાં સમાઈ ગયો...
ગુરુદેવની પ્રસન્નમુદ્રા ! કેવી સમતા ! કેવો હસમુખો
ચહેરો ! હવે ક્યાં જોવા મળશે ? શું લખવું કલમ
અને દિમાગ કામ કરતા નથી... સંઘને એક
આરાધક-પ્રશાંત-પુરાણી પેઢીના એક પીઢ
પથદર્શકની ખોટ પડી છે.

- સા. શ્રી રમ્યપ્રજ્ઞાશ્રીજી -



अयोध्यापुरम् सुमेरु नवकार तीर्थ प्रेरक,
जिनशासन रत्न, बंधु बेलडी पूज्य आचार्य

श्री जिनचन्द्रसागर सूरीश्वरजी म.सा.

शब्दांजलि

शासन को एक महान विरल
विभूति की क्षति हुई है। तन-मन से
शिष्य रत्नों के घड़-वैया बनकर
सुसंस्कारों से संयम के अदभुत
गुणों से विभूषित किया है।

सा. सुरक्षाश्रीजी
सा. राजनंदिताश्रीजी

शासनने એક મહાન વિરલ
વિભૂતિની ખોટ, શિષ્યરત્નોના તન-
મનથી ઘડવૈયા બનીને, સુસંસ્કારો
થી સંયમનાં અદ્ભૂત ગુણોથી
વિભૂષિત કર્યા છે!

સા. શ્રી સુરક્ષાશ્રીજી
સા. રાજનંદિતાશ્રીજી



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

પૂજ્યશ્રી કા વાત્સલ્ય અદ્ભુત
અનોખા થા । પૂરે સમૂહ કો એક
ધાગે મેં પિરોને મેં મહત્તમ યોગદાન
પૂજ્યશ્રી કા હી થા । છોટે-બડે
સબકો સચ્ચી સલાહ દેતે ।

સા. કલ્પજ્ઞાશ્રીજી
સા. શમપૂર્ણાશ્રીજી

પૂજ્યશ્રીનું વાત્સલ્ય અનોખું-અનેરૂ
હતું. આખા ગ્રુપ ને એક તાંતણે
પરોવવામાં મહત્તમ યોગદાન
પૂજ્યશ્રીનું જ હતું. નાના-મોટા સહુને
સાચી સલાહ આપતા.

સા. કલ્પજ્ઞાશ્રીજી
સા. શમપૂર્ણાશ્રીજી



અયોધ્યાપુરમ્ સુમેરુ નવકાર તીર્થ પ્રેરક,
જિનશાસન રત્ન, બંધુ બેલડી પૂજ્ય આચાર્ય

શ્રી જિનચન્દ્રસાગર સૂરીશ્વરજી મ.સા.

શબ્દાંજલિ

હમારે તો આધાર સ્તંભ ગયો ।
સિર છત્ર જાય, વજ્રાઘાત જૈસા
દુઃખ લગના સહજ હૈ । સમુદાય
કોમી નુકસાન હુઆ હૈ ।

સા. શમરસાશ્રી

આપના તો આધાર સ્તંભ
ગયા. સિર છત્ર જાય તો
વજ્રાઘાત દુઃખ લાગે, તો
સહજ છે

સા. શમરસાશ્રી